

डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 29, 1 कुरिन्थियों 12-14, आध्यात्मिक दान के विषय में प्रश्न पर पौलुस का उत्तर, 1 कुरिन्थियों 12

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह व्याख्यान संख्या 29, 1 कुरिन्थियों 12-14, आध्यात्मिक उपहारों से संबंधित प्रश्नों पर पॉल का उत्तर है। 1 कुरिन्थियों 12.

खैर, आपका फिर से स्वागत है क्योंकि हम 1 कुरिन्थियों के अध्याय 12 से 14 में अपने व्याख्यान जारी रखते हैं। हम नोटपैड 14 में पृष्ठ 183 पर हैं, और हम वास्तव में पाठ को देखना शुरू कर रहे हैं। इस पाठ में बहुत कुछ है, और फिर भी, उसी समय, हम कुछ को संक्षिप्त कर सकते हैं।

जैसा कि आप देख सकते हैं, 1 कुरिन्थियों में हमारा समय काफी विस्तारित हो रहा है। लेकिन साथ ही, हम आपको इतना देंगे कि आप इसे महसूस कर सकें, और फिर आपको अपना खुद का शोध करना होगा। दिन के अंत में, सीखने का मतलब एक गतिविधि है, और यदि आप सीखने के लिए कुछ गतिविधि नहीं करते हैं, जैसे कि टिप्पणियाँ पढ़ना, या सोचना, तो आप बस मेरी बात सुनेंगे और जल्द ही भूल जाएंगे कि मैंने क्या कहा, भले ही मैंने इसे आपके लिए उपयोगी तरीके से कहा हो।

इसलिए, इस क्षेत्र में अपना खुद का शोध करना महत्वपूर्ण है। पृष्ठ 183, हम अब अध्याय 12 के बारे में बात कर रहे हैं, प्रभु में आध्यात्मिक उपहार। आत्मा का कार्य विश्वासी को यीशु को प्रभु के रूप में पहचानने में सक्षम बनाना है, और इसी तरह से अध्याय शुरू होता है।

वास्तव में, यह एक आश्चर्यजनक शुरुआत है, लेकिन यह कुछ संदर्भ स्थापित कर रहा है, और संदर्भ अध्याय 14 में अनुभाग के अंत में वापस आता है। अब, आत्मा के उपहारों के बारे में, भाइयों और बहनों, मैं नहीं चाहता कि आप अनजान रहें। आप जानते हैं कि जब आप किसी न किसी तरह से बुतपरस्त थे, तो आप मूक मूर्तियों से प्रभावित हुए और भटक गए।

इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो कोई भी परमेश्वर की आत्मा से बोल रहा है, वह यह नहीं कहता कि यीशु शापित है। शापित होना शब्द का अर्थ है अभिशाप। कुछ संस्करणों में यीशु को अभिशाप कहा जाएगा और कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा के बिना यह नहीं कह सकता कि यीशु प्रभु है।

अब, कुछ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सेटिंग होनी चाहिए जिसमें यह समझ में आए। हम जानते हैं कि हम एक बहुदेववादी संस्कृति से निपट रहे हैं, एक ऐसी संस्कृति जो अपने जीवन को देवताओं के अनुसार चलाती है, विभिन्न तरीकों से देवताओं की ओर देखती है, और विभिन्न तरीकों से, यहाँ तक कि बहुलवादी तरीके से भी, उनका अनुग्रह चाहती है। हम जानते हैं कि बुतपरस्त लोग अन्य भाषाओं में बोलते थे।

हम बाद में इस बारे में कुछ बताएंगे। तो, चर्च में आने से पहले उनके जीवन में ऐसा था। शायद इसका इस बात से कुछ लेना-देना है कि क्यों कोरिंथियन चर्च ही एकमात्र ऐसा है जिसे यहाँ कुछ समस्याएँ हैं।

मुझे नहीं पता। मुझे नहीं लगता कि कोई भी वास्तव में जानता है। हमारे पास इस बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है कि यह सब कैसे जुड़ा हुआ है, लेकिन हमारे पास यह जानने के लिए पर्याप्त जानकारी है कि रोमन कोरिंथ में मूर्तिपूजक स्थिति बहुत बड़ी थी।

अब, खंड चिह्नक और विषय संकेत श्लोक 1 में चिंताजनक हैं। यह स्वतः स्पष्ट नहीं है कि न्यूमेटिकन, जो आध्यात्मिक हैं, किस स्वर को संदर्भित करता है। क्या यह उन लोगों का संदर्भ है जो आध्यात्मिक हैं, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं, या यह उपहारों का संदर्भ है, जैसा कि कुछ अन्य लोग मानते हैं? वे सुझाव देते हैं कि इस शब्दावली का उपयोग उपहारों के लिए किया जाता है ताकि आत्मा द्वारा दिए गए उपहारों के परिप्रेक्ष्य में उपहारों को रखा जा सके, अर्थात् आत्मा की चीजें। इसलिए, जब वह कहता है, मैं चाहता हूँ कि आपको सूचित किया जाए, तो आप जानते हैं कि जब आप मूर्तिपूजक थे, इसलिए, वैसे भी, क्षमा करें, मुझे वहाँ नहीं देखना चाहिए था।

पृष्ठ 183 के निचले भाग पर ध्यान दें। यह स्पष्ट नहीं है कि यह किस बात का संदर्भ देता है। क्या यह लोगों का संदर्भ है, या यह उपहारों का संदर्भ है? 12.1 में, मैं नहीं चाहता कि तुम अज्ञानी बनो, के बल पर विचार करें, इसके समकक्ष 14.38 में। यदि कोई अज्ञानी है, तो उसे अज्ञानी रहने दो।

यह एक दिलचस्प अंश है, लेकिन जब आप अध्याय 12-14 के लिए सीमा चिह्नों के बारे में सोचते हैं, तो यह देखना अच्छा लगता है कि पॉल ने इसी तरह से शुरुआत की और अंत भी किया। तथ्य यह है कि ये अंतिम पाठ हैं जो अज्ञानता के इस विरोधाभास को और भी स्पष्ट करते हैं। आप जानते हैं कि पॉल ने कुरिन्थियों के पिछले जीवन का पूर्वाभ्यास किया है।

हम इस ओउडे से सामना कर चुके हैं, जो कि, आप जानते हैं, का विचार है, लेकिन हम एक नकारात्मक खंड में सामना कर रहे थे। क्या आप यह नहीं जानते? क्या आप यह नहीं जानते? क्या आप यह नहीं जानते? इस बार इसे नकारात्मक रूप में रखने के बजाय, पॉल कहते हैं, आप जानते हैं। वह उन्हें बातचीत के संदर्भ में कुछ श्रेय देता है, और उन्हें उस पर प्रतिक्रिया देने में सक्षम होना चाहिए।

तो, यह एक तरह का अनुस्मारक है। आप जानते हैं, और तुरंत ही श्रोता सोचने लगते हैं, अच्छा, हम क्या जानते हैं? हाँ, मैं यह जानता हूँ, मैं यह जानता हूँ, मैं यह जानता हूँ। तो, यह मौखिक संस्कृति की बयानबाजी का हिस्सा है जहाँ इन्हें पढ़ा और प्रस्तुत किया जा रहा है।

पॉल द्वारा मूर्तियों का उल्लेख 20वीं सदी के पाठक को तुरंत स्पष्ट नहीं होता। हालाँकि, ऐसा लगता है कि पॉल पाठकों को याद दिला रहा था कि प्रेरित कथन भी बुतपरस्ती की घटनाएँ हैं। और यह कि ग्लोसोलालिया की असली परीक्षा मसीह के प्रभुत्व के प्रति समर्पण थी।

एक समर्पण जो प्रेरितिक शिक्षा के प्रति आज्ञाकारिता भी उत्पन्न करेगा। और इसलिए, यह यहाँ मुद्दा बन जाता है। प्रभु कौन है? पूर्व देवता, मसीह, और प्रभु के दूतों में से एक के रूप में पॉल इन

सब से कैसे संबंधित है? एफएफ ब्रूस हमें याद दिलाते हैं, उद्धरण देते हैं कि शास्त्रीय साहित्य में, अपोलो विशेष रूप से परमानंद कथन के स्रोत के रूप में प्रसिद्ध था।

टॉय की कैसंड्रा, डेलफी की पुजारिन के होठों पर। या कुमे की सिबिल, जिसका देवताओं के नियंत्रण में भविष्यवाणी करते समय उन्माद का वर्णन वर्जिल द्वारा विशद रूप से किया गया है। तो, यह उस संस्कृति में मौजूद था जो पॉल के लेखन से पहले थी।

एक विनम्र स्तर पर, प्रेरितों के काम 16 और 16 की भाग्य बताने वाली दासी पर किसी तरह की अजगर आत्मा का प्रभुत्व था, जिसके कारण वह बोलने लगी थी। और जिस व्यक्ति ने उसे नियंत्रित किया, उसने संभवतः लोगों को उस भाषण का अनुवाद करके पैसा कमाया। इसलिए, हम यहाँ देखते हैं कि हम ऐसी स्थिति में नहीं जा रहे हैं जहाँ संस्कृति में पहले से ही भाषाएँ ज्ञात नहीं थीं।

यह संस्कृति के लिए जाना जाता था, लेकिन अब हम एक और छत्र के नीचे हैं। यहाँ एक दिलचस्प सादृश्य है कि यह सब कैसे एक साथ आता है। तो, आप नेतृत्व किया गया था, बैरेट ने देखा, यह बुतपरस्त धर्म में अनुभव किए गए परमानंद के क्षणों का सुझाव देता है।

जब कोई इंसान किसी अलौकिक शक्ति से ग्रसित होता है या उसके बारे में ऐसा माना जाता है। उदाहरण के लिए, लुसियन के डायलॉगी मोरेटोरियम में, पेरिस प्रेम की शक्ति की बात करता है और एक तरह के ईश्वर की बात करता है। अब प्राचीन यूनानियों ने ईश्वर शब्द के लिए दानव शब्द का इस्तेमाल किया।

न्यू टेस्टामेंट के राक्षसों और उसके बीच कोई संबंध नहीं है, लेकिन संयोग से यही शब्दावली थी जिसका उन्होंने इस्तेमाल किया। आप इसे समय-समय पर देखेंगे। पहले, एक तरह का ईश्वर हमें जहाँ चाहे वहाँ ले जाता है, और उसका विरोध करना असंभव है।

यह एक तरह का उन्मादी, अनियंत्रित कथन है। रोमन दरबार के समय के प्राचीन धर्मों में यह एक आम बात थी। संभवतः ये लोग इसे मूर्तिपूजक मंदिरों में मानते थे।

वे निश्चित रूप से इस तथ्य से परिचित थे कि देवताओं के साथ संचार के परिणामस्वरूप अक्सर वह व्यक्ति समाधि में होता था जो उनसे संवाद करता था और किसी न किसी तरह की परमानंदपूर्ण बातें करता था। कभी-कभी समाधि की आवश्यकता भी नहीं होती थी। इसलिए, सच्ची आध्यात्मिकता के बारे में पौलुस का आधिकारिक निर्देश अब पद 3 में आता है। कुरिन्थ के पुरातात्विक कार्यों में लगभग 27 शाप पट्टियाँ पाई गई हैं।

इन शाप पट्टिकाओं पर कई तरह के अभिलेख हैं, जहाँ रोमन कोरिंथियन किसी और को शाप देने की कोशिश करते थे। शायद किसी व्यवसायी या किसी ऐसे व्यक्ति को जिसके साथ उनका विवाद चल रहा हो। शायद यह न्यायालयों से संबंधित हो।

लेकिन हमारे पास इस बात के सभी सबूत हैं कि रोमन कोरिंथ में उनके लिए अपने दुश्मनों और उन लोगों को शाप देने की कोशिश करना एक आम बात थी जिनके साथ उनका झगड़ा था। इस

बहुदेववादी संस्कृति ने कई चीजों को प्रभावित करने के लिए शाप के सूत्रों का इस्तेमाल किया। यह खेल, प्यार, राजनीति, प्रतिद्वंद्विता और वाणिज्य से संबंधित हो सकता है।

विंटर का तर्क है कि रोमन कोरिंथ में शापों के इस्तेमाल के सबूत कुछ ईसाई प्रथाओं में भी शामिल हो सकते हैं। देवताओं का लोगों पर शक्तिशाली प्रभाव था, और लोग अपने देवताओं को अपनी दुनिया में हेरफेर करने के तरीके के रूप में देखते थे। खैर, यह कुछ ईसाइयों से बहुत अलग नहीं है, है न? भगवान से यह करने के लिए कहना या भगवान से वह करने के लिए कहना।

लेकिन यह एक नकारात्मक संदर्भ था जिसे हम अभिशाप कहते हैं। सवाल यह है कि जो लोग ईसाई बन गए थे, उन्होंने शायद अतीत में ऐसा ही किया होगा। क्या उन्होंने ईसाई बनने के बाद भी इसे अपने हालात में बरकरार रखा? जो कि उनके द्वारा किए गए बदलाव को देखते हुए बहुत दूर की बात नहीं होगी।

एनाथेमा येसुस, जीसस। इसके पुनर्निर्माण के लिए कई प्रस्ताव हैं, लेकिन कुछ जानकारी की कमी के कारण, एनाथेमा येसुस का कोई अंतिम सम्मोहक उत्तर नहीं है। लेकिन कई प्रस्ताव हैं।

सबसे पहले, यह एक काल्पनिक अभिशाप हो सकता है जिसे पॉल ने प्रभुत्व के स्वीकारोक्ति को संतुलित करने के लिए रखा था। कोई भी यीशु को अभिशाप नहीं कह सकता, और कोई भी यह नहीं कह सकता कि यीशु प्रभु है। पुराने जीवन और नए जीवन के बीच अंतर करने के लिए।

यह बहुत संभव नहीं है, लेकिन कुछ लोग ऐसा कहते हैं। इसके अलावा, यहाँ एक निहितार्थ यह भी है कि कुछ गैर-ईसाई उन्मादी लोग अपने उन्माद की स्थिति में यीशु को कोस रहे होंगे। यह एक संघर्षशील संस्कृति थी।

कम से कम जो लोग ईसाई चर्च को छूते थे, वे चर्च के साथ संघर्ष में थे। और अगर उन्होंने अन्य चीजों के खिलाफ शाप की पट्टियाँ ली होतीं, तो इसका मतलब यह है कि उन्होंने चर्च के साथ अपने संघर्ष के संबंध में ऊपरी हाथ पाने की कोशिश करने के लिए उसी प्रक्रिया का इस्तेमाल नहीं किया होगा? या शायद कोरिंथियन विश्वासियों ने खुद भी ऐसा ही किया हो।

यानी दूसरों को शाप देने के लिए यीशु को बुलाओ। मेरा मतलब है, उन्होंने अपने दूसरे देवताओं के साथ ऐसा किया। शायद उन्हें लगा कि वे यीशु के साथ ऐसा कर सकते हैं। मेरा मतलब है, भजन संहिता में शाप देने वाले भजन हैं जहाँ भजनकार परमेश्वर से अपने शत्रुओं की देखभाल करने के लिए पुकारता है।

खैर, क्या यह असंभव है कि एक ईसाई अपने दुश्मनों से राहत पाने के लिए अपने भगवान को न पुकारे? यह न केवल संभव है बल्कि कभी-कभी उचित भी है। हालाँकि, उसी समय, शाप की पट्टियों के समान सांस्कृतिक पहलू का उपयोग करना उचित नहीं है। इसके अलावा, यीशु और ईसाइयों के खिलाफ आरोप के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला नारा यीशु के लिए अभिशाप हो सकता है।

क्या यह एक नारा था जिसे लोग इस्तेमाल कर रहे थे और जिसे संबोधित करने की आवश्यकता थी? और पॉल ने कहा, वे लोग वहाँ हैं, लेकिन आप इस तरफ हैं; यीशु आपके प्रभु हैं; इसलिए, आप कह सकते हैं कि यीशु प्रभु हैं। लेकिन अगर आप कहते हैं कि यीशु को शाप दो या यीशु तुम्हें शाप देते हैं, तो आप समुदाय का हिस्सा नहीं हैं। 110 ई. में, कोरिंथ के कुछ समय बाद, सवाल यह है कि क्या यह 50 के दशक के मध्य से लेकर अंत तक के समय में हो सकता था? प्लिनी द यंगर ने मसीह को अपमानित करने का आदेश दिया।

खैर, क्या ईसाई धर्म और यहूदियों या ईसाई धर्म और बुतपरस्तों के बीच कुरिन्थ में संघर्ष में मसीह को बदनाम करने के संदर्भ में कुछ चल रहा था? यह बहुत संभव है, लेकिन हमारे पास यह कहने के लिए कोई सबूत नहीं है कि इसका यही मतलब है। इसके अलावा, विंटर का पुनर्निर्माण इस पुस्तक की थीसिस है, यानी वह पुस्तक जो विंटर ने पॉल के कुरिन्थ छोड़ने के बाद लिखी थी, यह तर्क दिया गया है कि बुतपरस्ती की घुसपैठ इस बात में देखी गई थी कि कैसे ईसाईयों ने एक प्रतिकूल स्थिति में दूसरों के प्रति प्रतिक्रिया की, चाहे वह उनकी ईसाई सभा में हो या उसके बाहर। इसलिए यह सोचना बहुत दूर की बात नहीं है कि ईसाई वास्तव में यीशु को शाप देने के लिए इतना कुछ नहीं कह रहे थे, लेकिन वे मण्डली के भीतर भी अपने कुछ अंदरूनी झगड़ों से निपटने के लिए शापों का उपयोग कर रहे थे।

यीशु प्रभु हैं; हालाँकि, यह इस बारे में एक महत्वपूर्ण बात है। यह केवल मौखिक कथन नहीं है। यह केवल एक सूत्र होने का सूत्र नहीं है।

यह सूत्र रूप में एक स्वीकारोक्ति सत्य है। यीशु प्रभु है। रोमियों 10:9, एक बहुत प्रसिद्ध श्लोक।

अगर हम यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार कर सकते हैं, तो मुझे इसे पढ़ना चाहिए। मुझे नहीं पता कि अचानक मेरी याददाश्त क्यों चली जाती है। मुझे लगता है कि अभ्यास की कमी के कारण।

रोमियों 10:9, यहाँ बहुत जल्दी, पतले पत्रों पर। यदि आप अपने मुँह से घोषणा करते हैं, यीशु प्रभु है, और अपने दिल में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया है, तो आप बच जाएँगे। यीशु प्रभु है।

यीशु प्रभु के रूप में अनुवादों में से एक और है। लेकिन यह एक स्वीकारोक्ति सूत्र है। यीशु प्रभु हैं।

और इसलिए, यीशु को शाप देना इसका इन्कार करना है। और इसीलिए पौलुस कहता है कि आप ऐसा नहीं कर सकते। जो कोई भी यीशु को शाप देता है, उसने तुरंत यह प्रकट कर दिया है कि उसकी गतिविधियाँ परमेश्वर की आत्मा की नहीं हैं।

क्योंकि यह उन मापदंडों से बाहर है जो किया जा सकता है और निश्चित रूप से क्या किया जाना चाहिए, 12:1-3 के निष्कर्ष में, कई लोगों ने सोचा है कि 12.1-3 का उपहारों से क्या संबंध है। अध्याय 12-14 में, यह उपहारों के लिए एक अजीब परिचय प्रतीत होता है।

इसलिए, इस भाग को अक्सर जल्दबाजी में छोड़ दिया जाता है। लेकिन 12:1-3 संदर्भ के लिए कार्यक्रम-आत्मक है। विशेष आध्यात्मिक उपहारों के उचित उपयोग का पूरा मुद्दा मसीह के आपके प्रभु होने से संबंधित है।

मसीह के प्रभुत्व से संबंधित है। यदि मसीह आपके प्रभु नहीं हैं, तो आप प्रेम नहीं कर सकते। प्रेम एक समुदाय का नियम है।

गलातियों 5 के अनुसार प्रेम आध्यात्मिक निर्माण का नियम है। और इसलिए, यह पूरा मुद्दा यीशु के प्रभु होने से जुड़ा है। जैसा कि मैंने रूपरेखा में कहा है, वह सर्वोच्च प्रभु है। और आपके पास सर्वोच्च प्रभु है और आपके पास प्रेम का नियम है।

अध्याय 13 और 14 में। इन वरदानों का पूरा मुद्दा मसीह के प्रभुत्व से संबंधित है। दोनों वरदानों के होने से परमेश्वर की संप्रभुता का पता चलता है।

उपहारों का प्रयोग करते समय। 13 और 14 यह स्पष्ट करते हैं कि यह यीशु के प्रभुत्व के प्रति समर्पण है, यीशु की शिक्षाएँ ही हमारे मार्ग का मार्गदर्शन करती हैं। यदि आप अंतिम कथनों की तुलना करें, तो हमें यहाँ रहते हुए 14.37 और 38 को पढ़ना चाहिए।

यह लगभग वही बात है जो हम 12:1-3 में पढ़ते हैं। ओह। मैं रोमियों में था। मुझे पता था कि यह सही नहीं था।

14:37 और 38. यदि कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मा का वरदान समझता है, तो उसे यह जान लेना चाहिए कि मैं, पौलुस, जो तुम्हें लिख रहा हूँ, वह प्रभु की आज्ञा है। परन्तु यदि कोई इसे अनदेखा करे, तो वह स्वयं अनदेखा किया जाएगा।

पुराना अनुवाद है कि अगर कोई अज्ञानी है, तो उसे अज्ञानी ही रहने दो। मुद्दा क्या है? मुद्दा यह है कि प्रेरितों की शिक्षा को स्वीकार करने से इनकार करने से आप सत्य से दूर हो जाते हैं और गलती की श्रेणी में आ जाते हैं। और यीशु आपके प्रभु नहीं हैं जो गलती की श्रेणी में आते हैं।

यीशु प्रभु हैं, और जैसा कि मैंने दूसरे प्रसंग में कहा है, शब्द, सत्य प्रभु हैं। क्योंकि वे अविभाज्य हैं, अब, इस बारे में सोचना जारी रखें।

श्लोक 4-31 में, प्रभु परमेश्वर ने आध्यात्मिक उपहारों के क्षेत्र में एकता और विविधता को नियुक्त किया है। 12:1-3 के परिचय के बाद, टैल्बर्ट चियास्म के बारे में बात करता है। अब तक आप इसकी उम्मीद कर रहे होंगे।

शेष भाग में, 12:4-13, आध्यात्मिक उपहार। इसका उत्तर अध्याय 14 में आध्यात्मिक उपहार के मुद्दे की पुनरावृत्ति है। बीच में उपहारों को प्रकट करने में उचित प्रेरणा है।

यानी, प्रेम समुदाय का प्रबंधक है। इसे देखना बुरा विचार नहीं है। टैल्बर्ट 12.4-30 के लिए एक एबीए पैटर्न भी प्रस्तावित करता है, जो एक और चियास्म है जिसे मैं आपके लिए सूचीबद्ध नहीं करने जा रहा हूँ।

यह रूपरेखा सुझाव का पालन नहीं करती है। गारलैंड वास्तव में अध्याय 12-14 की संपूर्णता के लिए एक पूरी तरह से अलग चिआस्टिक योजना प्रस्तुत करता है। 12:1-3 और 14 का अंत शायद किसी को इसके बारे में उत्सुक कर देगा।

लेकिन हम उस मार्ग का अनुसरण नहीं करने जा रहे हैं। हम पैराग्राफ 1बी के संदर्भ में इसे आगे बढ़ाएंगे, उपहारों के वितरण में एकता और विविधता देखी जाती है।

तो, अब, जब उन्होंने इस तथ्य को पेश किया कि वे उपहारों के बारे में बात करना चाहते हैं, तो वे नकारात्मक बातों के साथ उनकी आलोचना करने के बजाय, सकारात्मक बातों को प्रस्तुत करना शुरू करते हैं और नकारात्मक बातें अपने आप प्रवाहित होती हैं और अपना ख्याल रखती हैं। आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों में विविधता है, लेकिन इन अभिव्यक्तियों की उत्पत्ति के संदर्भ में एकता है। अध्याय 12 श्लोक 4-6 में।

12-14 की प्रकृति ऐसी है कि 12-14 एक कथा की तरह है। कभी-कभी इस पाठ को ध्यान से पढ़ने से इसका अर्थ जल्दी समझ में आ जाता है। इसमें कुछ मुख्य शब्द हैं, कुछ मुख्य विचार हैं और कुछ विवादास्पद व्याख्याएँ हैं।

लेकिन इसे पढ़ना महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं ऐसा करने जा रहा हूँ। श्लोक 4-6। विभिन्न प्रकार के उपहार हैं, लेकिन एक ही आत्मा उन्हें वितरित करती है।

सेवा के विभिन्न प्रकार हैं, लेकिन भगवान एक ही है। यह विषय है, भगवान एक ही है। काम करने के विभिन्न प्रकार हैं, लेकिन उन सभी में और हर किसी में, एक ही भगवान काम कर रहा है।

वही, वही, वही। पॉल ईश्वरत्व के साथ सादृश्य द्वारा एकता के भीतर विविधता के मुद्दे पर विचार करता है। एकता और विविधता का विषय सृष्टि के प्रतिरूप में अंतर्निहित है।

एकता, विविधता। ईश्वरत्व की प्रकृति एकता की मांग करती है। जबकि ईश्वरत्व के व्यक्तियों की विशेषताएँ विभिन्न प्रकार की सेवकाई और अभिव्यक्तियाँ हैं, यह एकता पर आधारित विविधता है।

यहाँ दोहराव के पैटर्न पर ध्यान दें। मैंने आपके लिए ग्रीक भाषा दी है, जो इसे जानते होंगे, ताकि आप देख सकें कि ऑटोस का गुणवाचक रूप कितना स्पष्ट है, जिसका अर्थ समान है। यही एकमात्र तरीका है जिससे हम समान कह सकते हैं।

आपके पास विभिन्न प्रकार की विविधताएँ हैं, लेकिन एक ही है। न्यूमा, आत्मा। अंतर, लेकिन एक ही भगवान।

अंतर, लेकिन एक ही ईश्वर। तो, आपके पास पिता, पुत्र और आत्मा हैं। त्रिदेव को यहाँ उपहारों के समन्वय और एकता और विविधता के संदर्भ में चित्रित किया गया है जो शरीर में होने का हिस्सा है।

यही जोर अध्याय 12 और आयत 7 से 11 में भी जारी है। आप देखेंगे। अब, प्रत्येक व्यक्ति को, आत्मा का प्रकटीकरण, जिसके बारे में हमने पहले बात की है, आम भलाई के लिए दिया गया है।

इन विषयों पर ध्यान दें। एकता, विविधता, साझा हित। यह सब एक साथ आता है।

और पॉल ने इसे कथात्मक रूप में उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया है। एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि का संदेश दिया जाता है। दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा ज्ञान का संदेश दिया जाता है।

दूसरे को उसी आत्मा द्वारा विश्वास। दूसरे को उसी आत्मा द्वारा चंगाई का वरदान। तीसरे को उसी आत्मा द्वारा चमत्कारी शक्तियाँ।

किसी को भविष्यवाणी करना। किसी को आत्माओं में अंतर करना, छोटी-छोटी बातें। किसी को विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलना। और किसी को अन्य भाषाओं का अर्थ बताना।

ये सब एक ही आत्मा का काम है: एकता। और वह उन्हें हर एक को वितरित करता है, विविधता, जैसा कि वह निर्धारित करता है। अब, यह एक विशेष सूची है।

यह एक दिलचस्प सूची है जिसे हम दो तरीकों से देखने जा रहे हैं। मानवीय स्तर पर, एकता का मतलब एकरूपता नहीं बल्कि विविधता के साथ जीने की क्षमता है। पृष्ठ 185 पर इस पर ध्यान दें।

इसे दिल से मान लें। एकता का मतलब एकरूपता नहीं है। मुझे लगता है कि कई बार, ईसाई नेतृत्व में, हम लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश करते हैं।

और हम सोचते हैं कि अगर हम उन्हें अपने अनुसार ढाल लें, तो हम एकता प्राप्त कर लेंगे। नहीं। अगर आपके पास उनका दिमाग नहीं है और इसलिए उनकी इच्छा नहीं है, तो आपके पास एकता नहीं होगी।

आपको बस जबरन श्रम करना होगा। एकता का मतलब अनुरूपता नहीं है, बल्कि यह विविधता की सराहना है। 186, पृष्ठ के शीर्ष पर।

उपहारों की विविधता को चित्रित किया गया है, लेकिन उनके उद्देश्य, सामान्य भलाई, और उनके मूल, आत्मा में एकता पाई जाती है। वितरण, 12:7, और 11 इस खंड के लिए एक समावेश प्रदान करते हैं। 12:7 प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से आत्मा के वितरण का परिचय देता है।

और 12:11, हर एक के लिए, खंड को बंद करता है। तो, इसकी सीमाएँ हैं। आत्मा का लक्ष्य समुदाय और शरीर के लाभ, सामान्य भलाई के लिए है।

आत्मा शरीर को संतुलित रखने, उसे आवश्यक विविधता प्रदान करने और विभिन्न व्यक्तियों के उपहारों के माध्यम से उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसका प्रबंधन करती है। ईश्वर की योजना के अनुसार, कोई भी व्यक्ति छूटा नहीं है। हर कोई इसमें शामिल है।

वितरण से लेकर विस्तार तक, ध्यान दें कि उपहार की सीमा शब्द परमेश्वर की संप्रभु पसंद से है। जबकि हर कोई शरीर में शामिल है, हर कोई समान रूप से प्रतिभाशाली नहीं है। हर किसी के पास एक जैसे उपहार नहीं होते।

किसी के पास चाय का प्याला है। किसी के पास पीपा है। यही जीवन है।

क्यों? क्योंकि उपहार, आखिरकार, हम लोगों के रूप में कौन हैं इसका अंतिम परिणाम हैं। और बहुत से कारणों से, लोग जीवन भर के विकास के बाद ईसाई बनने और चर्च में शामिल होने के बिंदु तक पहुँचते हैं। और कुछ ने अच्छा विकास किया, और कुछ ने अच्छा विकास नहीं किया।

उपहार के स्तर से संबंधित होगा। भगवान बस इसे स्वचालित रूप से ओवरराइड नहीं करते हैं। अब, कुछ अलौकिक उपहार हैं जो केवल कार्य नहीं हैं जिन्हें संप्रभु भगवान को वितरित करना चाहिए क्योंकि वे उस संबंध में हमारी पसंद नहीं हैं।

वे अलग हैं, और वे अलग हैं, खास तौर पर इस सूची में जिसके बारे में मैं फिर से सोचूंगा। गैर-चमत्कारी आध्यात्मिक उपहारों को आध्यात्मिक गठन के उत्पाद के रूप में सोचें। इसे फिर से कहें।

उन उपहारों के बारे में सोचें जो चमत्कारी नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसी चिकित्सा प्राप्त करने के लिए उन्हें ईश्वर के हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती। उपहारों को आध्यात्मिक निर्माण के उत्पाद के रूप में सोचें।

जैसे-जैसे हम ईसाई जीवन और समुदाय में भाग लेते हैं, हम में से प्रत्येक की ताकत और कमजोरियाँ समय के साथ सामने आती हैं। और आत्मा उन सभी तरीकों से प्रबंधन करती है जिनके बारे में हम जानते भी नहीं हैं ताकि हम चर्च के भीतर उसकी भलाई के लिए उभरें। अगर यही हमारा लक्ष्य है, तो चर्च की भलाई के लिए परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया जाना।

क्या आप जानना चाहते हैं कि आपकी प्रतिभा क्या है? हर कोई जानना चाहता है, है न? फिर काम पर लग जाइए। और दूसरों के द्वारा आपके पैटर्न और सफलता को देखकर आपको सूचित करने का इंतज़ार कीजिए। क्या आपके पास ऐसे लोग नहीं आए हैं जो आपके पास आकर कहें कि आप इस काम में वाकई बहुत अच्छे हैं?

लोग आपकी बात सुनते हैं। आप वाकई मेरे या किसी और के लिए किसी खास क्षेत्र में मददगार हैं। इसे सुनना शुरू करें।

इसके बारे में सोचना शुरू करें। और इसे अपनी प्रतिभा के पैटर्न के रूप में देखना शुरू करें। सूची, 12:8 से 10, जिसे हमने अभी पढ़ा।

सूची एक इकाई है। फी ने कुछ तिरस्कार के साथ इस बात पर ध्यान दिया है कि व्याख्याकार इस विशेष सूची की विषय-वस्तु और संगठन पर एक निश्चित व्याख्या रखकर किस तरह के एजेंडे अपनाते हैं। उनकी अधिकांश आलोचनाएँ अच्छी तरह से ली गई हैं।

हालांकि, यह निराशाजनक है कि उन्होंने सूची के स्पष्ट संतुलन और संगठन पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि साहित्यिक विधा में यही बात संचार करती है। इसे कैसे तैयार किया जाता है? इसे कैसे बनाया जाता है? उन सवालों के जवाब दिए जाने चाहिए। आइए इस बारे में सोचें।

सूची में अंतिम स्थान पर अन्य भाषाओं के होने के मुद्दे पर, यह एक तरह से सूचनात्मक नोट है। मैं आपको कुछ ग्रंथसूची का संदर्भ देता हूँ। क्या यह आत्मा के माध्यम से दिया गया है? क्या वहाँ यूनानी शब्द है? शब्द कैसे बड़े अक्षरों में है।

आत्मा कैसे देती है? हमने इस बारे में थोड़ी बात की है। आप जो हैं, जो आप अपने पूरे जीवन में बन गए हैं, अब चर्च की छत्रछाया में, उसे ऊर्जा प्रदान करके। मुझे लगता है कि यही मानक तरीका है।

अन्य मुद्दे भी हैं, जैसे कि जीवन का चमत्कारी पक्ष। लेकिन चर्च के सामान्य कामकाज में, इनमें से ज्यादातर सूचियाँ उन कार्यों और कार्यों पर हावी हैं जो चर्च को संचालित करने और उनकी दुनिया में प्रभावी होने के लिए ज़रूरी थे - सूची में अलग-अलग आइटम।

क्या यह सूची है, और आपने पहले भी इसकी संरचना देखी है; इसे पृष्ठ 187 के शीर्ष पर देखें। आप संरचना देख सकते हैं। जब आप इसे पहली बार देखते हैं, तो आप कह सकते हैं, ओह, यहाँ एक और चियास्म है।

नहीं, ऐसा नहीं है क्योंकि चियास्म के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक टुकड़ा उपरोक्त को प्रतिबिंबित करे। यह एक ही सामग्री होनी चाहिए।

यह एक ही विषय-वस्तु होनी चाहिए। वे एक ही विषय-वस्तु नहीं हैं। लेकिन इसमें संतुलन है।

और इसमें एक संरचना है। और जिस तरह से हम संरचना को देखते हैं, उनमें से एक यह है कि हमारे पास चार डबलट का एक सेट है। और हमारे पास एक अजीब कथन है, जो चमत्कारी शक्तियाँ हैं।

लेकिन यही इस बात का मुख्य बिंदु है। मुझे लगता है कि यह एक तैयार की गई सूची है। मुझे लगता है कि यह एक संतुलित सूची है।

इससे यहाँ कुछ संदेश भेजे जा रहे हैं। यदि आप इसे स्वीकार करते हैं, तो बीच में मौजूद चमत्कारी शक्तियाँ सूची में मौजूद अन्य सभी वस्तुओं की परिभाषा का एक प्रमुख हिस्सा हैं। हम इस बारे में थोड़ी देर में थोड़ा और सोचेंगे।

यह सूची हमें क्या और कैसे संदेश देती है? मैंने समरूपता के बारे में बात की है। मैंने संतुलन के बारे में बात की है। मैंने केंद्र के बारे में बात की है।

इसमें क्या समानता है? खैर, मुझे लगता है कि इस सूची में जो समानता है वह यह है कि यह कुछ ऐसा है जो भगवान को करना है। ऐसा कुछ नहीं जो मेरी व्यक्तिगत प्रतिभा का परिणाम है। मैं ठीक नहीं कर सका क्योंकि मुझे एस्पिरिन देने की प्रतिभा हो सकती है।

और आस्था को इस सूची में क्यों रखा गया? हम सभी को आस्था रखने की आवश्यकता है। लेकिन आस्था इस सूची में है। ऐसा क्यों लगता है कि यह उपचार से जुड़ा हुआ है? खैर, आइए सूची के बारे में सोचें।

संभावित परिभाषाएँ। सूची में शब्दों के साथ चुनौती यह है कि सूचियों में संदर्भ की कमी होती है। आपको ऐसा करना ही पड़ता है, और परिणामस्वरूप, आपको या तो उस सूची से बाहर जाकर अन्य उपयोग खोजने पड़ते हैं या आपके पास जो संदर्भ है, उसमें तर्क की तलाश करनी पड़ती है।

और फिर भी, साथ ही, हमें हमेशा उतना नहीं मिलता जितना हम चाहते हैं। उदाहरण के लिए, कुरिन्थियों में हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला है जो चंगाई के बारे में बात करता हो। या आत्माओं को पहचानने के बारे में, उस मामले में।

तो, इसमें एक चुनौती है। कोई भी व्यक्ति या कोई भी स्रोत जो उपहार सूची में आइटम को आत्मविश्वास से परिभाषित करता है, संभवतः खुद को वैधता से अयोग्य ठहराता है। यदि आप इस सूची पर टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, और वे आपको बताते हैं कि उनके अनुसार इन शब्दों का क्या अर्थ है, तो आपको कुछ विविधता मिलेगी।

चूँकि हमारे पास सूचियों के अलावा इतना डेटा नहीं है कि हम इन सभी बातों को समझ सकें, हमारे पास कुछ डेटा है और यह मददगार है। हम व्यापक अध्ययन और अच्छे स्रोतों से सीख सकते हैं।

और फिर भी, साथ ही, यह निश्चित रूप से अंतिम रूप से तय नहीं है। अगर हम इस सूची के लिए संभावित संरचना को स्वीकार करते हैं जो मैंने प्रस्तावित की है, कि यह संतुलित है, और इसमें चमत्कारी शक्तियाँ मुख्य हैं, तो सूची में सभी आइटम चमत्कारी शक्तियों का हिस्सा हैं। चमत्कारी शक्तियाँ पूरी सूची को परिभाषा देती हैं।

इसलिए, मैं इस धारणा पर काम कर रहा हूँ कि यह सूची अलौकिक अभिव्यक्तियों के बारे में है। और चमत्कारी शक्तियों के बारे में। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैं बड़ा होकर, सीखकर और करके, और फिर चर्च में आकर करके विकसित कर सकता हूँ।

यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर को चमत्कारिक रूप से प्रदान करना है। इसलिए, यदि हम इसे स्वीकार करते हैं, तो सूची में सभी वस्तुएँ प्राकृतिक उपहारों के बजाय अलौकिक उपहारों का हिस्सा हैं। और यह चर्च में सेवकाई के लिए है।

ऐसा चमत्कारी शक्तियों और सूची में मौजूद वस्तुओं की प्रकृति के कारण है। और अगर आप इन सूचियों पर बेहतर टिप्पणियाँ पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि वे इसे कैसे परिभाषित करते हैं, हालांकि मुझे ऐसा कोई नहीं मिला जो इसे संरचना के संदर्भ में ठीक वैसे ही देखता हो जैसा मैं देखता हूँ।

वे इसका संकेत देते हैं, लेकिन शायद उन्होंने इसे चार्ट में नहीं लिखा। एक बार जब आप इसे चार्ट में डाल देते हैं, तो यह आपको बहुत ज़्यादा प्रभावित करता है - उदाहरण के लिए, पहला डबलट।

बुद्धि का शब्द, ज्ञान का शब्द। जाहिर है कि इनमें कुछ समानता है। उदाहरण के लिए, दोनों के पास लोगो हैं।

मैं इन शब्दों को परिभाषित करने की बहुत कोशिश नहीं करने जा रहा हूँ क्योंकि साहित्य में आपके लिए बहुत सारे सुझाव हैं। लेकिन मेरा सुझाव है कि यदि आप सूची की संरचना और डिजाइन का पालन करते हैं, तो आप कहेंगे कि ज्ञान का एक शब्द, ज्ञान का एक शब्द, पवित्र अनुमान नहीं है, बल्कि यह जानकारी देने की ईश्वर की अलौकिक गतिविधि है। पहले दोहरे में, शब्द या संदेश हावी है।

इन्हें परिभाषित करते समय, हमें कम से कम संदेश पर ज़ोर देना चाहिए, जो बुद्धि और ज्ञान से आता है। ऐसा लगता है कि इतने प्रतिभाशाली व्यक्ति मण्डली को परमेश्वर का संदेश इस तरह से पहुँचाएँगे जो सटीक हो, अंतिम प्रेरणा के रूप में नहीं, बल्कि एक नरम अर्थ में प्रेरित हो। यह शिक्षाप्रद प्रवचन है।

लेकिन उन्हें बुद्धि कहाँ से मिली? उन्हें ज्ञान कहाँ से मिला? कोई कह सकता है, ठीक है, उन्हें यह पॉल को ध्यान से पढ़ने से मिला, हाँ। लेकिन मुझे लगता है कि इसमें कुछ खास बात है, सिर्फ़ खुद को शिक्षित करने से कहीं बढ़कर। इसमें भगवान का हाथ एक खास तरीके से है।

मुझे लगता है कि आस्था और उपचार एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। खैर, यहाँ कुछ दिलचस्प बातें हैं। सबसे पहले, ये शब्द यथोचित रूप से स्वयंसिद्ध हैं।

लेकिन अगर वे इस सूची में हैं, और वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, तो हमें पूछना होगा कि वे एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं? आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में विश्वास और उपचार का क्या संबंध है? और विश्वास यहाँ क्यों होगा? हम सभी को विश्वास रखना चाहिए। इसलिए, यह कुछ खास होना चाहिए। यहाँ, विश्वास केवल विश्वास नहीं है, बल्कि यह विशेष है क्योंकि यह सूची में है।

और यह विशेष रूप से काज के कारण विशेष है। क्या असाधारण कार्य करना विश्वास है या वास्तव में परमेश्वर की इच्छा के विशेष ज्ञान के आधार पर विश्वास, जिसके लिए प्रत्यक्ष,

रहस्योद्घाटन ज्ञान की आवश्यकता होगी? यदि उत्तरार्द्ध मामला है, तो किसी को आश्चर्य होना चाहिए, और जब मैंने पहली बार इसका अध्ययन किया और इसे जेम्स 5 के साथ सहसंबंधित किया, तो इसने मुझे एक टन ईंटों की तरह मारा। जेम्स 5 की व्याख्या में एक समस्या यह है कि जब बुजुर्ग एक साथ आते हैं और प्रार्थना करते हैं कि कोई ठीक हो जाए, तो वे यह नहीं कहते कि क्या यह परमेश्वर की इच्छा है।

वे जेम्स 5 में किसी भी तरह का संदेह नहीं करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि व्यक्ति ठीक हो जाए। मैं जिस भी ईसाई समुदाय में शामिल रहा हूँ, जो जेम्स 5 का अभ्यास करने की कोशिश करता है, वे हमेशा उस अभ्यास को शर्त के तौर पर रखते हैं। वे इसे इस आधार पर शर्त के तौर पर रखते हैं कि यह प्रभु की इच्छा है और सभी तरह से।

और मुझे आश्चर्य है, इस तथ्य के प्रकाश में कि याकूब 5 आपको कभी भी कोई शर्त नहीं देता है, यह पूरी तरह से बोलता है। उन बुजुर्गों को चर्च के उस शुरुआती चरण में जो कुछ वे कर रहे थे, उसके अनुसरण के संदर्भ में एक उपहार होना चाहिए था जैसा कि याकूब 5 में वर्णित है। और याकूब 5 चंगाई के बारे में बात कर रहा है। याकूब 2 पहले से ही विश्वास के बारे में बात कर रहा है। और इसलिए यहाँ हमारे पास यह मिलान है।

और याकूब 5 में तो यह वाक्यांश भी इस्तेमाल किया गया है, अगर वे किसकी प्रार्थना करें? विश्वास की प्रार्थना। व्यक्ति चंगा हो जाएगा। खैर, सहसंबंध कार्य-कारण नहीं है।

यह एक सामान्य सिद्धांत है। इसलिए, मैं सिर्फ सहसंबंध के आधार पर अपनी बात साबित नहीं कर सकता। लेकिन मैं आपको सुझाव देना चाहता हूँ कि आप इसके बारे में सोचें।

इसे देखिए। और दिन के अंत में, इसे कम से कम एक स्पष्टीकरण के रूप में स्वीकार करें कि हम इस सूची से कैसे समझ सकते हैं। यहाँ बहुत सारे संयोग हैं।

और जैसा कि मैंने सेना में सीखा है, कोई संयोग नहीं होता। हर चीज का कोई न कोई कारण होता है। इसलिए, मैं यहाँ इस बारे में सोच रहा हूँ।

आस्था की प्रार्थना बीमारों को जगाती है। और इसलिए यहाँ हमारे पास, मैं इसे आस्था उपचार नहीं कहूँगा जैसा कि कुछ परंपराएँ कहती हैं। लेकिन हमारे पास आस्था और उपचार का संबंध है।

मेरे विचार में, चमत्कारी तरीके से, इस तरह से ऐसा करने के लिए सिर्फ एक अच्छा ईसाई होने से परे अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। फिर, चमत्कारी शक्तियाँ यहाँ बीच में हैं। खैर, हाँ, चमत्कारी शक्तियाँ।

शक्ति के कार्य, पराक्रमी कार्य, चमत्कारी चिह्न। यही है वह कड़ी। यह अकेली खड़ी है।

यह किसी और चीज़ से जुड़ा हुआ नहीं है। यदि प्रस्तावित संरचना सही है, तो यह संकेत देता है कि सूची में सभी आइटम अलौकिक अभिव्यक्तियों की छत्रछाया में हैं। और यही बात मैंने आपको पहले बताई थी।

यह कोई चियास्म नहीं है, बल्कि यह एक संतुलित संरचना है। हम शुरुआत और अंत में आसानी से डबलट देख सकते हैं, जो हमें आंतरिक भाग के लिए प्रभाव देता है। फिर, अजीब बात यह है कि यह चमत्कारी शक्ति है।

इसलिए, मैं सूची को इस तरह से देखने का प्रयास कर रहा हूँ। फिर यह भविष्यवाणी और आत्माओं को पहचानने के बारे में बात करता है। पूरे बाइबिल इतिहास में, भविष्यद्वक्ता वे लोग हैं जिन्हें प्रकट सत्य सौंपा गया है, और परमेश्वर के लोगों तक आधिकारिक जानकारी पहुँचाने का कार्य सौंपा गया है।

लेकिन न्यू टेस्टामेंट में इसे चुनौती दी गई है। वेन गुडेम और तीसरी लहर के कुछ धर्मशास्त्री। अगर आपको नहीं पता कि तीसरी लहर का क्या मतलब है, तो पेंटेकोस्टलिज्म की डिक्शनरी देखें जो ज़ोंडरवन द्वारा बनाई गई है।

पीटर वैगनर ने तीसरी लहर पर भी एक लेख लिखा है। और पहली लहर है, जो पेंटेकोस्टल है। दूसरी लहर करिश्माई है।

और तीसरी लहर विम्बर आंदोलन में है, जो कैलिफोर्निया में था और वाइनयार्ड चर्च का निर्माण था, जो बड़ा हो गया है और हमारे साथ मौजूद है। तीसरी लहर, गुडेम ने पैगंबर की शास्त्रीय श्रेणी से नए नियम के पैगंबरों की भूमिका को फिर से परिभाषित किया। इसलिए, गुडेम का दिमाग नए नियम के पैगंबरों को पुराने नियम के पैगंबरों के बराबर नहीं मानता।

मैंने देखा है कि गुडेम के प्रस्तावित दृष्टिकोण को न तो मुख्यधारा के व्यवस्थित धर्मशास्त्र द्वारा अपनाया गया है और न ही बाइबिल धर्मशास्त्र पर काम करने वालों द्वारा। मैंने अकादमिक प्रकाशन में किसी को भी उनके साथ जुड़ते नहीं देखा है। यह बहस व्यापक है।

लेकिन संक्षेप में, गुडेम ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की क्लासिक परिभाषा को भगवान के लिए निहित प्रवक्ता के रूप में मान्यता दी। पुराने नियम में, वे भगवान का मुंह थे। मूसा भगवान का मुंह था।

लेकिन नए नियम में, गुडेम ने क्लासिक भविष्यवक्ताओं के काम को प्रेरितों से जोड़ा और फिर नए नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए एक नई परिभाषा बनाई। उद्धरण: भविष्यवक्ता और भविष्यवाणी शब्द का इस्तेमाल आम ईसाइयों द्वारा किया जाता था जो पूर्ण ईश्वरीय अधिकार के साथ बात नहीं करते थे। अब, अगर आपने यह सुना और आप पुराने नियम के भविष्यवक्ता के बारे में सोच रहे थे, तो आप कहेंगे, एक मिनट रुकिए।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने ईश्वरीय अधिकार से बात की। वे परमेश्वर के मुख थे। उन्होंने परमेश्वर का वचन बोला।

और बेहतर होगा कि आप उनकी बात सुनें। बिल्कुल। और आप जानते हैं कि अगर वे जो कहते हैं वह सच नहीं होता तो वे सच्चे भविष्यवक्ता नहीं हैं।

यहाँ जो बहुत बड़ी पुनर्परिभाषा चल रही है, उस पर ध्यान दें। लेकिन केवल उस बात की रिपोर्ट करना जो परमेश्वर ने उनके दिलों में डाली थी या उनके दिमाग में लाई थी। मुझे वह नामकरण कमजोर लगता है।

गुडेम कहते हैं कि नए नियम में कई संकेत हैं कि भविष्यवाणी के इस साधारण उपहार का अधिकार बाइबल से कम था और यहां तक कि शुरुआती चर्च में मान्यता प्राप्त बाइबल शिक्षा से भी कम था। इसलिए, इन नए नियम के भविष्यवक्ताओं को ऐसे लोगों में बदल दिया गया है जिनके पास भावनात्मक भावनाएं और विचार हैं और वे उन्हें बाहर निकालते हैं ताकि देख सकें कि वे कहां जाते हैं। व्यंग्य के लिए क्षमा करें।

परिणामस्वरूप, गुडेम ने एक नए प्रकार के भविष्यवक्ता का निर्माण किया जो अंततः आधिकारिक नहीं था और गलतियां कर सकता था। यह परिभाषा कुछ चर्च परंपराओं को भविष्यसूचक गतिविधि करने की अनुमति देती है क्योंकि यह अब शास्त्र के अनुरूप आधिकारिक रहस्योद्घाटन का कोई दावा नहीं करती है। इसलिए, आप लोगों को भविष्यवक्ता होने का दावा करते हुए, बयान देते हुए देख सकते हैं, और देखें कि वे कहां जाते हैं।

क्योंकि भविष्यवक्ता गलतियां कर सकते हैं, वे भी इंसान ही हैं, आप जानते हैं। वे वाकई इंसान ही हैं।

यह निर्माण निश्चित रूप से कुछ धार्मिक प्रतिमानों की सेवा करता है। गुडेम अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र में कैल्विनवाद और करिश्माईवाद का एक अजीब मिश्रण है, उदाहरण के लिए, अपने स्वयं के लेखन और जीवन में संबंधों में।

मैं उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में निश्चित नहीं हूँ, जॉन विम्बर के जीवित रहते हुए वे तीसरी लहर के विचारों के एक प्रमुख समर्थक थे। उस अवधि के साहित्य के लिए वाइनयार्ड चर्च की वेबसाइट देखें। उन्होंने तीसरी लहर के विचारों के समर्थक के रूप में लिखा।

तो, गुडेम की कहानी में और भी बहुत कुछ है। गुडेम ने इस सवाल पर अपना शोध प्रबंध लिखा और फिर उसे प्रकाशित किया। उन्होंने यह काम कैम्ब्रिज में किया।

उनके गुरु वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी में रिचर्ड गैफिन नामक प्रोफेसर थे। जब गुडेम ने गैफिन से बात की, जिनका वे सम्मान करते थे, कि वे किस विषय पर लिख रहे हैं, तो गैफिन चिंतित हो गए और उन्होंने गुडेम और उनके शोध प्रबंध के प्रकाशन से पहले ही एक किताब लिख डाली, ताकि गुडेम जो कहने की कोशिश करने जा रहे थे, उसके लिए कुछ हो। उन्होंने इसका नाम पर्सपेक्टिव्स ऑन पेंटेकोस्ट रखा।

मुझे लगता है कि यह ग्रंथ सूची में है। यदि आप इन प्राकृतिक, अलौकिक पहलुओं के बारे में बहस में हैं, तो रिचर्ड गैफिन की 'पेंटेकोस्ट पर परिप्रेक्ष्य' एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। वास्तव में, गैफिन को एक सेसेशननिस्ट दृष्टिकोण के मुख्य समर्थकों में से एक माना जाना चाहिए, कई बार जब सेसेशननिस्ट का उल्लेख किया जाता है तो वे बीबी वारफील्ड जैसी पुरानी सामग्री का उपयोग कर रहे होते हैं, जो आधुनिक दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसके संदर्भ में पूरी तरह से चार्ट से बाहर है।

ऐसे आसान लक्ष्य हैं जिन्हें सेट किया जाता है और गिराया जाता है। इसलिए, आपको इस सामग्री को समझने के लिए व्यापक रूप से और गहराई से पढ़ना होगा। मैं 12 से 14 पर अपने अंतिम व्याख्यान में इसके बारे में अधिक बात करूँगा।

नए नियम की भविष्यवाणी पर, अगबस को देखें। जब मैं परमेश्वर की इच्छा के बारे में बात करता हूँ तो यह मेरे पसंदीदा अंशों में से एक है। अगबस को पहले से ही पता था कि पौलुस के लिए परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा क्या है, जब वह यरूशलेम जा रहा था।

उसने पॉल को बताया कि क्या होने वाला था। अच्छी समझ यह कहती कि, अब जबकि पॉल को इस बात की जानकारी मिल गई है कि क्या होने वाला है, तो पॉल को कुछ अलग करना चाहिए ताकि वह सेवकाई में उपयोगी बना रहे। लेकिन पॉल ने पहले से ही एक एजेंडा तय कर लिया था, उसके मन में अपने लक्ष्य थे, और वह भविष्य को जानने से भी प्रभावित नहीं होने वाला था।

क्या आपने कभी सोचा है कि अगर आपको भविष्य पता हो तो आप कोई अच्छा निर्णय ले सकते हैं? भूल जाइए। अगबस पढ़िए। भविष्य के बारे में जानना आपके लिए कोई अच्छा निर्णय लेने का मापदंड नहीं है।

आप अच्छे कारणों से अच्छे निर्णय लेते हैं, इसलिए नहीं कि आपको भविष्य पता है। इसे अपने दिमाग से निकाल दीजिए। और फिर फिलिप की बेटियों के बारे में भी।

हम अध्याय 14 में इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे। आत्माओं की पहचान अगला अध्याय है। खैर, बहुत से लोग इस पर कूद पड़ते हैं और कहने की कोशिश करते हैं कि इसका संबंध यह पता लगाने से है कि किसी के अंदर राक्षस है या नहीं।

मुझे ऐसा नहीं लगता। यह सबसे पहले भविष्यवाणी से जुड़ा हुआ है। आत्माओं को पहचानना भविष्यवाणी संबंधी सामग्री में एक आम विषय है, जिसकी शुरुआत व्यवस्थाविवरण से होती है, जिसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि भविष्यवक्ता सच बोल रहा है या नहीं।

आत्माओं को पहचानने का अर्थ सबसे अच्छा उन व्यक्तियों से है जिन्हें भविष्यवाणियों के कथनों को प्रमाणित करने के लिए अलौकिक रूप से उपहार दिया गया है। भविष्यवाणी का सत्य। वास्तविक बनाम नकली भविष्यवाणियों के कथनों का विवेक।

इस वाक्यांश को शैतानी करने के मुद्दे पर लागू नहीं किया जाना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि इसका इससे कोई लेना-देना है। डिडेचे नामक पोस्ट-एपोस्टोलिक दस्तावेज़ की तुलना करें।

दूसरी शताब्दी में चर्च किस तरह काम करता था, इस बारे में हमारे पास सबसे शुरुआती दस्तावेजों में से एक है। यह आपको इनमें से कुछ क्षेत्रों में चर्च के व्यक्तिपरकता के प्रबंधन के बारे में कुछ जानकारी देगा। अंतिम द्विगुणित भाषाएँ भाषाओं के प्रकार और भाषाओं की व्याख्या हैं।

पहले दो स्पष्ट रूप से जुड़े हुए हैं। अंतिम दो स्पष्ट रूप से जुड़े हुए हैं, जो बाकी को तर्क देता है। पृष्ठ 189।

यह समापन जोड़ी ज्ञान और ज्ञान प्रभाव की शुरुआती जोड़ी है, इस सूची को चमत्कारों के काम से जुड़े दोहरे की एक श्रृंखला के रूप में देखते हुए। टिका। भाषाओं के प्रकार।

केवल यहाँ और 1028 में ही हमें यह वाक्यांश मिलता है। यह दो दिशाओं में जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह परमानंदपूर्ण भाषण है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह भाषाएँ हैं। आपको उस बाड़ के दोनों तरफ अच्छे विद्वान मिल जाएँगे, और मैंने आपको उनमें से सिर्फ़ एक नमूना दिया है। ऐसे बहुत से विद्वान हैं।

जीभ और प्रेरितों के काम को ज़्यादातर सुसमाचार प्रचार और प्रामाणिकता के उद्देश्यों के लिए भाषाएँ माना जाता है। लेकिन जब आप 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में आते हैं तो कुछ डेटा मिलते हैं जो सवाल उठाते हैं कि क्या ये असली भाषाएँ थीं जिन्हें कोई व्यक्ति जो भाषा जानता था, व्याख्या या अनुवाद कर सकता था। या फिर यह परमानंद भाषण की एक और घटना है।

हालाँकि, 1 कुरिन्थियों 14:22 वास्तविक भाषा है क्योंकि यह वह दृष्टांत है जिसका उपयोग पॉल ने इस संबंध में किया है कि कैसे अन्यभाषाएँ उन श्रोताओं से संबंधित होंगी जो एक ईसाई समुदाय में आते हैं और उन्हें पता नहीं होता कि क्या हो रहा है। हम थोड़ी देर में उस पर और उसके स्थान के बारे में बात करेंगे। इसलिए, जबकि 1 कुरिन्थियों 12 स्वयं-स्पष्ट नहीं है और 14:1-5 की शुरुआत में ऐसा लगता है कि ग्लोसोलालिया 14:22 अधिनियमों के अनुसार ज़ेनोलोजिया की संभावना को बढ़ाता है।

विस्तृत टिप्पणियाँ आपके लिए इसे खोल देंगी, लेकिन ध्यान दें कि ये दो शब्द ग्लोसोलालिया ग्लोसा से हैं, जो जीभ के लिए शब्द है, और फिर लालेओ संज्ञा रूप में भाषण के लिए शब्द है, इसलिए जीभ या जीभ के प्रकारों में बोलना है। ज़ेनोलोजिया एक ऐसा शब्द है जिसका वास्तविक भाषाओं से संबंध है। इसलिए, जब आप साहित्य पढ़ेंगे, तो आपको ये दो शब्द दिखाई देंगे, और आपको पता होना चाहिए कि उनका क्या मतलब है।

यहाँ न्यू टेस्टामेंट भविष्यवाणी मुद्दे से संबंधित एक छोटी सी ग्रंथ सूची है, जिसमें गुडेम और कुछ अन्य लोगों की पुस्तक शामिल है। मैंने देखा कि मेरे पास यहाँ गैफ़ की पुस्तक नहीं है। हालाँकि, आप इसे इन नोट्स या नोट पैक 15 के अंत में आने वाली ग्रंथ सूची में पा सकते हैं। ठीक है, तो हम इस समय एकता और विविधता और वितरण के बारे में बात कर रहे हैं।

अब आइए अध्याय 12 के अंत में आयत 12 से 31 में एकता और विविधता तथा इन उपहारों के कार्यों के बारे में थोड़ी बात करें। एकता की नींव। अब पौलुस शरीर के रूपक का उपयोग करता है।

अध्याय 12, श्लोक 12 और 13. जिस तरह एक शरीर में कई अंग होते हैं, लेकिन उसके सभी अंग मिलकर शरीर बनाते हैं, उसी तरह मसीह के साथ भी है। इसलिए यहाँ हम एक रूपक स्थापित कर रहे हैं।

क्योंकि हम सब को एक ही आत्मा से बपतिस्मा दिया गया, मैं तो यह कहना चाहूँगा कि एक ही आत्मा में बपतिस्मा दिया गया ताकि एक ही शरीर बने, चाहे यहूदी हों या गैर-यहूदी, गुलाम हों या स्वतंत्र, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाई गई। इसी तरह शरीर भी एक भाग से नहीं बल्कि कई भागों से बना है। ठीक है, बड़ा रूपक।

एक प्रसिद्ध रूपक। चर्च मसीह का शरीर है, और पॉल ने इन रूपकों का कई जगहों पर इस्तेमाल किया है, बहुत ज़्यादा नहीं, लेकिन कुछ जगहों पर। आइए इनके बारे में सोचना शुरू करें।

शरीर का रूपक संभवतः पुराने नियम के कॉर्पोरेट व्यक्तित्व के विचार से लिया गया है। यह तकनीकी शब्द है। पुराने नियम में कभी भी किसी चीज़ को विभाजित नहीं किया गया।

हिब्रू आदमी को यूनानियों द्वारा शरीर और आत्मा को अलग-अलग रखना पसंद नहीं था। वे एक थे। वहाँ कॉर्पोरेट व्यक्तित्व है।

कई लोग इस बात को मानते हैं। फिट्ज़मेयर शायद उनमें से एक है। ग्रीक या रोमन बालीपोलिटिक नामक एक और विकल्प भी है जिसे फिट्ज़मेयर वास्तव में मानते हैं।

बेस्ट इस सामग्री पर एक और लेखक है जिसका हवाला फिट्ज़मेयर ने दिया है। मेरे पास वहाँ प्राथमिक स्रोत नहीं था। और थिसलटन ने बालीपोलिटिक को पकड़ रखा है, जो एक स्वाभाविक बात है क्योंकि यह वह दुनिया है जिसमें वे एक रूपक के रूप में उपयोग करने के लिए रहते थे।

बालीपोलिटिक क्या थी? यह पॉल के समय के समाज का वर्णन करती है। पॉल अपने उद्देश्यों के लिए इनमें से किसी भी रूपांकन को आसानी से बदल सकता था। रोमन बालीपोलिटिक वह एकता थी जिसे वे आबादी के माध्यम से हासिल करने की कोशिश करते थे।

यह शहर के कल्याण की तलाश का हिस्सा है, जिस पर विंटर ने एक किताब लिखी और अन्य लोगों ने उसी परियोजना में अपनी भागीदारी के बारे में एक किताब लिखी। उनके पास अपनी बालीपोलिटिक थी, सभी नामकरणों का बिल्कुल एक ही तरीके से उपयोग नहीं करना, लेकिन वह मानसिकता, वह कल्पना, एक ही उद्देश्य के लिए सभी के एकजुट होने का प्रतिमान उनकी संस्कृति का हिस्सा था। इसलिए, हम ठीक से नहीं जानते कि पॉल ने इसे क्यों चुना, लेकिन उसके पास बहुत सारे तरीके हैं जिनसे वह ऐसा कर सकता था। यदि नहीं, तो वह इसे एक अच्छे उदाहरण के रूप में बिना सोचे-समझे कर सकता था।

एकता का मतलब है शरीर। विविधता का मतलब है शरीर के अंग। तो यहाँ हम एकता और विविधता की थीम शुरू करते हैं।

एकता और विविधता। यह दावा कि एक आत्मा में, हम सभी को एक शरीर में बपतिस्मा दिया गया था, को थोड़ा स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। चर्च परंपराओं में इसका एक व्यापक इतिहास है कि कुछ लोग इसे कुछ पेंटेकोस्टल-प्रकार के संप्रदायों में आत्मा का बपतिस्मा कहते हैं, और पहली और दूसरी लहरें इस नामकरण का उपयोग आत्मा द्वारा बपतिस्मा लेने के लिए अन्य तरीकों से करती हैं।

मुझे कुछ शब्द कहने दीजिए। सबसे पहले, 189 के अंत में सुसमाचार और प्रेरितों के काम के अलावा आत्मा द्वारा या आत्मा में या आत्मा के माध्यम से बपतिस्मा का एकमात्र उल्लेख है, और सुसमाचार और प्रेरितों के काम में, यह मसीह पर लागू होता है। वह बपतिस्मा देने वाला है, पवित्र आत्मा नहीं।

दूसरा, पृष्ठ 190 पवित्र आत्मा बपतिस्मा देने वाला नहीं है, बल्कि वह साधन है जिसका उपयोग मसीह शरीर के उद्घाटन को प्रभावित करने के लिए करता है। कई अनुवादों में पूर्वसर्ग in का अनुवाद by किया गया है, लेकिन यह भ्रामक हो सकता है। By एक एजेंसी शब्द है।

पूर्वसर्ग in का बल वास्तव में स्पष्ट नहीं है, और इस पर बहस होती है कि क्या इसे वाद्य के रूप में समझा जाना चाहिए, जो एक लड़का होगा, या क्या यह स्थानीय है, जो एक क्षेत्र होगा या in या through एक नरम अर्थ में। in या through का उपयोग by शब्द से बेहतर विकल्प है। मसीह बपतिस्मा देने वाला है, और आत्मा वह है जो इस पूरी स्थिति को बढ़ाती है लेकिन उस दृष्टिकोण से शरीर को कार्य करने और प्रबंधित करने का कारण बनती है।

अब, यह निर्माण में थोड़ा रचनात्मक हो रहा है क्योंकि हमारे पास भाषाई कथन इतने स्पष्ट नहीं हैं कि हम और अधिक कह सकें। इस रूपक का महत्व, सबसे पहले, शरीर के लिए आध्यात्मिक एकता प्रदान करता है। यह एक रूपक है।

यह जातीय बाधाओं को तोड़ता है। चर्च में बिना किसी भेदभाव के सभी को शामिल किया जाता है। शरीर की छवि सभी शब्द को हटा देती है, आध्यात्मिक व्यक्तियों के कुछ विशेष वर्ग के लिए अभिजात्यवाद या स्थिति को सही ठहराने के लिए इस कथन का उपयोग करना समाप्त कर देती है।

जो लोग पहुँच चुके हैं या जिन्हें यह मिल गया है, जैसा कि मेरी चाची ने मुझसे एक बार कहा था, क्या आपको यह मिल गया है? मैंने उनसे मुलाकात की और उन्हें बताया कि मैं मंत्रालय में जा रहा हूँ। वह एक खास संप्रदाय में थीं जहाँ आपको आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जाता था जब तक कि यह नहीं हो जाता, जब तक कि आपको यह नहीं मिल जाता, तब तक आपको पर्याप्त रूप से सशक्त नहीं किया जाता। तो यह उनका मुझसे पहला सवाल था।

क्या मैं उसके धार्मिक मानदंडों पर खरा उतरा, भले ही वह धर्मशास्त्र के बारे में नहीं सोचती थी? इसके अलावा, यहाँ बपतिस्मा का उपयोग एक दुर्लभ आलंकारिक उपयोग है जो सामान्य जल अध्यादेश से अलग है। बपतिस्मा हमेशा गीला होता है जब तक कि संदर्भ अन्यथा संकेत न दे।

रोमियों 6 गीला है। कुछ अमेरिकी ईसाई परंपराओं में आत्मा बपतिस्मा के कारण इसे गड़बड़ कर दिया गया है, लेकिन यह वहाँ नहीं है। यह गीला है।

और यही वह बात है जो आपको बपतिस्मा के बारे में माननी चाहिए जब तक कि संदर्भ कुछ और न बताए। यह संदर्भ ऐसा ही करता है। इसके अलावा, रोमन कोरिंथ ने उस निकाय राजनीतिक विचार में शहर या निकाय के कल्याण की तलाश के सिद्धांत को समझा होगा।

अगर पॉल यही बात कह रहा था, जिसे हम पूरी तरह से नहीं जानते हैं। आत्मा में बपतिस्मा के इस वाक्यांश का अर्थ पिन्तेकुस्त के रूप में लिया जाना चाहिए और इसे फोरेंसिक कथन के रूप में देखा जाना चाहिए। चर्च का उद्घाटन पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था।

यही आत्मा और आग में बपतिस्मा है जिसके बारे में यीशु ने बात की थी। और यह चर्च के लिए एक फोरेंसिक कानूनी शुरुआती बिंदु है। फोरेंसिक शब्द का यही अर्थ है।

यह चर्च की कानूनी शुरुआत है। और ऐसा नहीं है कि हर बार जब कोई व्यक्ति उद्धार पाता है तो उसका नया बपतिस्मा होता है। नहीं।

आप उस फोरेंसिक शुरुआत का हिस्सा बन जाते हैं जो चर्च ने की थी। यह एक तकनीकी बात है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। इसमें वे सभी लोग शामिल हैं जो अंततः विश्वास करते हैं, न कि हर बार जब कोई चर्च में आता है तो बपतिस्मा की निरंतर पुनरावृत्ति को शामिल करना।

लेकिन हमें पेंटेकोस्ट के दिन शरीर में बपतिस्मा दिया गया था। जब हम उस पर विश्वास करते हैं और उससे पहचान करते हैं, तो हम अपने विश्वास के परिणामस्वरूप कानूनी रूप से उससे जुड़ जाते हैं। यह एक फोरेंसिक मुद्दा है।

यहाँ आत्मा बपतिस्मा पर कुछ ग्रंथ सूची दी गई है। वास्तव में, हंटर, हेरोल्ड हंटर चर्च ऑफ गॉड से इसके समर्थक हैं, मेरा मानना है। और इसलिए, मैं आपको ऐसे स्रोत दे रहा हूँ जो इसके पक्ष और विपक्ष दोनों को देखते हैं।

अब, विविधता का औचित्य। हमारे पास एकता है। हमारे पास विविधता है।

शरीर हमें एकता प्रदान करता है। अंग हमें विविधता प्रदान करते हैं। लेकिन आइए श्लोक 14 से 26 में इसके बारे में थोड़ा सोचें।

फिर भी, मुख्य भाग एक भाग से नहीं बल्कि कई भागों से बना है। मैं सोच रहा हूँ कि यहाँ पैराग्राफ़ कहाँ से शुरू होता है। हम वास्तव में पैराग्राफ़ के बीच में हैं।

अब, यदि पैर कहे, क्योंकि मैं हाथ का नहीं हूँ, और वह पैर और उसकी अन्य विशेषताओं की इस सूची से गुजरता है। और, बेशक, मसीह शरीर का मुखिया बन जाता है।

भगवान ने शरीर के अंगों को श्लोक 19 या 18 में रखा है, उनमें से हर एक को वैसा ही जैसा वह चाहता था। उनकी संप्रभुता। अगर वे सभी एक अंग होते, तो शरीर कहाँ होता? जैसा कि है, कई अंग हैं लेकिन शरीर एक है।

तो, विविधता। मुझे लगता है कि यह इकाई 12, 14 और 20 से चिह्नित है। कई अंग, एक शरीर।

और 14 कहता है कि एक शरीर कई भागों से बना है। आप देख सकते हैं कि यह एक सीमा है, भले ही अधिकांश संस्करणों में पैराग्राफ 15 से शुरू होते हैं।

बहुतों पर जोर देने से सभी सदस्य घेरे में आ जाते हैं, न कि किसी को बाहर कर देते हैं। इन कई पैराग्राफों की सूची देखें जिन्हें मैंने आपके लिए यहाँ नोट किया है। पृष्ठ 190 के नीचे।

हर विश्वासी शरीर का एक ज़रूरी अंग है। और हम इन दृष्टान्तों का इस्तेमाल हमेशा करते हैं, है न? मेरा मतलब है, एक नाखून को उखाड़ने जैसी छोटी सी बात भी आपको हफ्तों तक परेशान कर सकती है। यह छोटी सी चीज़।

या अपने बड़े पैर के अंगूठे या छोटे पैर के अंगूठे को तोड़ दें और देखें कि आपके साथ क्या होता है। मेरा मतलब है, जो हम सोचते हैं कि बस वहाँ है और आकस्मिक है, वह तब बहुत बड़ा हो सकता है जब कुछ होता है। इसलिए, शरीर का हर अंग एक उद्देश्य पूरा करता है।

हर विश्वासी को दूसरे विश्वासियों की मदद की ज़रूरत होती है, ठीक वैसे ही जैसे शरीर का हर अंग दूसरे अंग के अच्छे काम पर निर्भर करता है। कोई भी अपने आप में एक राज्य या एक शरीर नहीं है।

हर आस्तिक एक दूसरे का पूरक है। मैं के पूरक नहीं, बल्कि हम अपनी एकता से एक दूसरे को पूरा करते हैं। और समुदाय में रहकर।

यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दूसरे के पूरक बनें, न कि ।। हम एक दूसरे की पूर्ति करते हैं। हम एक दूसरे की मदद करते हैं।

जहाँ मैं कमज़ोर हूँ, वहाँ तुम मज़बूत हो। जहाँ तुम कमज़ोर हो, वहाँ मैं मज़बूत हूँ। और शरीर को इसी तरह काम करना चाहिए।

हर एक विश्वासी दूसरे से मिला हुआ है। 25 और 26. ताकि देह में कोई फूट न हो।

लेकिन इसके सभी भागों को एक दूसरे के प्रति समान चिंता होनी चाहिए। अगर एक भाग को तकलीफ होती है, तो बाकी सभी भाग उसके साथ तकलीफ उठाते हैं। अगर एक भाग को सम्मान मिलता है, तो बाकी सभी भाग उसके साथ खुश होते हैं।

अब, पौलुस ने यह नहीं बताया कि वह शरीर की एकता और विविधता के बारे में क्यों बात कर रहा है। लेकिन जाहिर है कि वह अभी भी विभाजनों से निपट रहा है। वे विभाजन जिन्हें हमने अध्याय 1 से 4 में देखना शुरू किया था। और वे विभाजन उपहारों के अभ्यास में मौजूद थे।

इसका तात्पर्य यह है कि जिस तरह से वह जीभों के साथ व्यवहार करता है, उससे कुछ लोगों को लगता है कि जीभें बिल्ली की म्याऊँ हैं। आपके लिए एक रूपक है। कुछ लोगों को लगता है कि जीभें बिल्ली की म्याऊँ हैं।

और अगर वे अन्य भाषाओं में बोलते थे, तो वे कुछ खास थे। और पॉल इसका खंडन करते हैं और कहते हैं, नहीं, ऐसा नहीं है - विविधता का तर्क।

इसलिए, पृष्ठ 191 पर, कोई भी इससे दूर नहीं जा सकता और यह नहीं सोच सकता कि शरीर का कोई भी अंग महत्वहीन है। या कोई भी अंग अपने आप ही खत्म हो सकता है। हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है।

यार, यह बात हमारे लिए समझना मुश्किल है, है न? यह एक ऐसा सरल सत्य है जिसे जीना बहुत मुश्किल है। साथ ही, कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। मुझे लगता है कि इसका सबसे बड़ा उदाहरण परिवार है।

हम चर्च को ईश्वर के परिवार के रूप में देखते हैं, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं कितने सालों से ईसाई हूँ? मैं 1963 में नौसेना में रहते हुए ईसाई बना, यू.एस. नौसेना। मुझे 1967 में नियुक्त किया गया था। इसलिए, इस साल, अगस्त में, मैंने नियुक्त मंत्रालय के 50 साल पूरे कर लिए हैं।

और इस मामले में, 50 साल की शादी। और मुझे यहाँ खरगोश के रास्तों पर नहीं जाना चाहिए, और मैं यह याद करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ कि मैं किस बारे में बात कर रहा था। और इसलिए, शरीर का कोई भी हिस्सा समाप्त नहीं हुआ है।

मेरे मन में आपके लिए एक बढ़िया विचार आया, और मैंने उपमाओं का उपयोग करना शुरू कर दिया, और अब मैं पूरी तरह से भूल गया हूँ कि मैं क्या कहने जा रहा था। मुझे खुशी है कि इन सभी व्याख्यानों में यह पहली बार है कि मैंने इसे बिल्कुल उसी तरह किया। मैं हमेशा अपने खेल में नहीं रहता, लेकिन उस एक ने मुझे वास्तव में प्रभावित किया, इसलिए आप चाहें तो खूब हँस सकते हैं। क्योंकि मैं आपको सुन नहीं सकता, बस ज़ोर से हँसूँ।

ठीक है? कोई भी दो चीजें बिल्कुल एक जैसी नहीं होतीं। चलिए आगे बढ़ते हैं। पेज 191, 1डी।

विविधता ईश्वर की योजना है। अब, इसे समझिए। एकता, विविधता।

प्रकृति में, मानव जीवन में, और फोरेंसिक पुलिसिंग में, कोई भी दो आवाज़ें बिल्कुल एक जैसी नहीं होतीं। कोई भी दो उंगलियों के निशान बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। यार! विविधता।

यहां तक कि जब आप प्रकृति और मानवता के बारे में सोचना शुरू करते हैं, तो यह हर जगह दिखाई देता है। सब कुछ अलग है, और फिर भी सब कुछ एक कार्य करता है। एकता और विविधता।

विविधता ईश्वर की योजना है। अगर हम सब एक जैसे होते, तो यह दुनिया कितनी उबाऊ होती। तर्क यह है कि विविधता 14 से 17 में ईश्वर की रचनात्मक योजना का हिस्सा है।

मैं यहाँ बहुत कुछ पढ़ने नहीं जा रहा हूँ। यहीं पर वह अपनी कहानी सुनाता है। विभिन्न अनुवादों में यह मुद्दा कि क्या कथनों की श्रृंखला प्रश्न हैं या दावे, ध्यान देने योग्य है, लेकिन यह वास्तव में अर्थ के लिए बहुत ही आकस्मिक है।

ग्रीक पाठ में प्रश्न चिह्न हैं। आप इनमें से कई पढ़ सकते हैं, और संस्करण अलग-अलग होंगे। क्या यह एक दावा है, या यह एक प्रश्न है? खैर, हम बयानबाजी में हैं।

प्रश्नों का अर्थ तो अच्छा होगा, लेकिन साथ ही, जहाँ तक अंतिम अर्थ का सवाल है, अर्थ अभी भी स्पष्ट है, चाहे वह दावे हों या प्रश्न। बस थोड़ी सी तकनीकी बात पर ध्यान देना है। श्लोक 18 से 20।

निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि विविधता परमेश्वर का निर्णय है - श्लोक 18.

लेकिन वास्तव में, परमेश्वर ने शरीर में अंगों को रखा है, हर किसी को जैसा वह चाहता था। पद 18 का ध्यान परमेश्वर के सर्वोच्च वितरण पर है। और वह सर्वोच्च वितरण जिस तरह से उसने हमें बनाया है, वह सर्वोच्च वितरण है जिस तरह से वह हमें बदलता है, यह सर्वोच्च वितरण है जो हमें उस छत्र के नीचे लाने और हमें कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

उस वाक्य के भीतर प्रत्येक खंड एक महत्वपूर्ण बिंदु बनाता है कि दिन के अंत में, यह भगवान के तरीके से भगवान का काम है। ग्रीक छात्रों को ध्यान देना चाहिए कि 12:11 और 18 इच्छा के लिए दो शब्दों की समानार्थी प्रकृति को दर्शाते हैं। बौलामी और थेलो ।

कुछ लोग कुछ खास ग्रंथों में प्रमुख धार्मिक बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए इन समानार्थक शब्दों को अलग करने का प्रयास करते हैं। उनकी अदला-बदली, यानी, इन दो शब्दों की अदला-बदली, यहाँ संकेत करती है कि यह एक संदर्भ है, न कि कोई भाषाई रूपिम, जो अर्थ प्रदान करता है। इसलिए, यदि आप ऐसी स्थिति में हैं जहाँ लोगों ने उदाहरण के लिए, कुछ साबित करने के लिए बौलामाई का उपयोग किया है, तो बौलामाई का उपयोग न करें ; संदर्भ का उपयोग करें।

शब्दों के मामले में यह लगभग हमेशा सच होता है। शब्द अपने संदर्भ के अनुसार अपना अर्थ लेते हैं, न कि उनकी शब्दावली के अनुसार। बहुत सावधान रहें क्योंकि बहुत सारे शब्द अध्ययन बहुत ही गलत जानकारी वाले होते हैं।

ठीक है। विविधता के बीच एकता और समानता, श्लोक 21 से 26 में परमेश्वर की योजना है। यहाँ भी, यह एक ऐसा कथात्मक प्रारूप है कि मैं इस पर विस्तार से नहीं बताऊँगा।

आँख हाथ से नहीं कह सकती, मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं। यह जो हो रहा है उसका एक सुंदर रूपक चित्रण है। श्लोक 24, जबकि हमारे आकर्षक अंगों को किसी विशेष उपचार की आवश्यकता नहीं है, परमेश्वर ने शरीर को एक साथ रखा है, उन अंगों को अधिक सम्मान दिया है जिनमें इसकी कमी है, ताकि शरीर में कोई विभाजन न हो।

एक बार फिर विभाजन की अवधारणा है। 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में और उस समुदाय में विभाजन की अवधारणा अंतर्निहित थी।

विचार करने के लिए प्रश्न: मंत्रालय के संदर्भ में लोगों की एकता और विविधता का उपयोग कैसे किया जा सकता है? आप विविधता को विभाजन और समस्याओं के कारण के बजाय एक ताकत कैसे बना सकते हैं? मैंने पादरी के रूप में काम किया है, और शायद आप में से कई पादरी या मंत्रालय के पेशेवर हैं जो लोगों से निपटते हैं। या शायद आप सिर्फ माता-पिता हैं जिनके बच्चे हैं। वे सभी एक जैसे हैं, है न, बच्चे? शायद ही।

वे कभी-कभी रात और दिन की तरह अलग होते हैं। आप विविधता को कमज़ोरी के बजाय ताकत कैसे बना सकते हैं? मंत्रालय में यह एक बड़ी चुनौती है। यह हमारे व्यक्तित्व की चुनौतियों में से एक है कि हम इसे पूरा कर सकें।

लेकिन सच्चाई यह है कि सबसे पहले हमें यह पहचानना होगा कि विविधता ईश्वर की इच्छा है। और अगर आपके पास यह व्यक्ति और यह व्यक्ति है, और वे रात-दिन अलग-अलग हैं, और आप एक दूसरे की तुलना में एक की ओर आकर्षित होते हैं, तो आपको यहाँ बहुत सावधान रहना होगा। आपको उनके साथ समान रूप से व्यवहार करने और उनकी सेवा करने की आवश्यकता है।

परिणामस्वरूप, हममें से प्रत्येक के लिए विविधता के साथ जीने में कुछ चुनौतियाँ हैं। हम सभी को ऐसे लोग पसंद हैं जो हमारी तरह सोचते हैं। हम सभी को ऐसे लोग पसंद हैं जो हमारी तरह काम करते हैं।

हम अनुकूलता चाहते हैं। लेकिन किसी भी मण्डली में अनुकूलता नहीं होती। किसी भी परिवार में पूर्ण अनुकूलता नहीं होती।

विविधता है। इसलिए, आपको विविधता को कमज़ोरी नहीं बल्कि ताकत बनाने का तरीका खोजना होगा। यह ईश्वर की इच्छा है कि आप ऐसा करें।

किसी ने कहा है कि लोगों का नेतृत्व करना बिल्लियों को इकट्ठा करने जैसा है। ठीक है, अगर आपको यह बात समझ में नहीं आई, तो यह बात समझ लीजिए। लोगों का नेतृत्व करना एक पैन में गर्म जेली को इकट्ठा करने जैसा है।

अब, यह एक अच्छा उदाहरण है। मंत्रालय में इस कल्पना को समझने में ज़्यादा समय नहीं लगता। मंत्रालय के लिए नेतृत्व को कॉर्पोरेट के मॉडल के अनुसार नहीं बनाया जाना चाहिए।

हमने आधुनिक दुनिया में इस तरह के बड़े पाप किए हैं। जैसा कि एक लेखक ने कहा, नेतृत्व साझा व्यवहार का तरीका है। प्रैक्सिस अभ्यास के लिए एक और शब्द है।

इसका मतलब यह है कि नेता अपने अनुयायियों को एक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम बनाते हैं, न कि केवल उसका पालन करने में। थॉमस ग्रूम द्वारा लिखी गई इस तरह की एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसका नाम है शेयरिंग फेथ, ए कॉम्प्रिहेंसिव अप्रोच टू रिलीजियस एजुकेशन एंड पैस्टोरल मिनिस्ट्री, द वे ऑफ शेयर्ड प्रैक्टिस। आपको उस पुस्तक का अध्ययन करने की सलाह दी जाएगी।

यह कोई साधारण किताब नहीं है। यह कोई बेकार ईसाई किताबों की दुकान की किताब नहीं है। यह एक चुनौतीपूर्ण किताब है।

यह एक शैक्षणिक पुस्तक है। यदि आप विषय-सूची को देखें, तो आप देख सकते हैं कि मंत्रालय में यह कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है। यह आपको एक समूह लेने और नेतृत्व के विचार को लेने और समूह को कुछ निश्चित खंडों, लगभग सात खंडों के माध्यम से काम करने के लिए प्रेरित करती है, ताकि जब आप इसके अंत तक पहुँचें, तो वे न केवल यह जानें कि आपने क्या कहा, बल्कि वे समझें कि आपने क्या कहा, और अब वे यह चुनाव कर रहे हैं कि क्या वे आपकी कही गई बातों को अपनाना चाहते हैं और उसमें शामिल होना चाहते हैं।

यह उन लोगों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है जो सेवकाई में हैं। ग्रूम ने बताया है कि विचारों को कैसे संसाधित किया जाए ताकि विचारों का स्वामित्व सिर्फ एक व्यक्ति के बजाय एक समूह के पास हो। अगर आप लोगों को उपदेश दे रहे हैं, तो उन्हें यह बताएँ कि उन्हें क्या करना है, बिना उन्हें उस जगह पर लाए जहाँ वे इसे करना चाहते हैं।

फिर से उसी तरह की मिसाल। आप घोड़े को पानी तक ले जा सकते हैं, लेकिन उसे पानी पिला नहीं सकते। आपको यह सीखना होगा कि उसे प्यास कैसे लगानी है ताकि वह खुद पानी पीना चाहे।

यह एकता और विविधता के कुंड का एक पेय है। शक्ति समूह के स्वामित्व में है, न कि केवल तथाकथित नेता में। जहाँ एक निकाय, ग्रूम की विषय-सूची का मात्र अवलोकन आपको दिखा सकता है कि वह पुस्तक आपके लिए कितनी मूल्यवान हो सकती है।

इसके अलावा, श्लोक 27 से 31, शरीर होने के बारे में निष्कर्ष। हम अगले कुछ क्षणों में अध्याय 12 का समापन करेंगे - 12:27 में एक रूपक का समापन कथन।

इस पर एक नज़र डालें। अब, आप मसीह का शरीर हैं, और आप में से हर एक इसका एक हिस्सा है। परमेश्वर ने चर्च में रखा है, और फिर वह एक और सूची देता है।

ठीक है। तो, मुख्य भाग केंद्रित है, और फिर वह एकता और विविधता के बारे में बात करने के लिए उसी तरह की संरचना के बिना पहली बार दी गई सूची में बदलाव के साथ आगे बढ़ता है।

अंतिम सूची में संचार और नेतृत्व के गुणों को पहले स्थान पर रखा गया है, जबकि कुछ लोगों द्वारा बहुत मूल्यवान दिखावटी गुणों को सूची के सबसे अंत में 28 से 31 में रखा गया है।

इस सूची को व्याख्यात्मक और शब्दकोश संबंधी खदान कहा गया है। एक बड़ा मुद्दा यह है कि क्या रैंकिंग नामकरण वास्तविक रैंक को इंगित करता है या यह सूची बनाने का सिर्फ एक साहित्यिक तरीका है। हमारा इससे क्या मतलब है? अच्छा, इसे देखिए।

पहला, प्रेरित। दूसरा, भविष्यद्वक्ता। तीसरा, शिक्षक।

फिर, आपको सूची के बाकी हिस्से मिलेंगे। कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें। चमत्कार, हाँ।

उपहार के उपहार। उन्होंने क्यों गिनाया? यही एकमात्र सूची है जो कभी होती है। इसके साथ क्या हो रहा है? और इस बात पर बहुत सारी स्याही डाली गई है कि किसी ऐसे निर्माण के साथ आने की कोशिश की जाए जो दावे के संदर्भ में सहज महसूस करे।

यह स्पष्ट करते हुए कि प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों को कुछ लोगों की ओर से भाषाओं के प्रिय उपहार से बेहतर माना जाना चाहिए, सूची में वह भी शामिल है जिसे कुछ लोग सूची में सभी उपहारों में सबसे नीरस मान सकते हैं। मदद करता है! आपके पास ऐसे लोग हैं जो उपहार में हैं, सभी शुरुआत में रहस्योद्घाटन सामग्री के बिंदु तक, और फिर आपके पास सहायकों की श्रेणी के तहत चौकीदार है। इससे यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि शरीर में हर कोई महत्वपूर्ण है।

हर किसी का कोई न कोई उद्देश्य होता है। अपने उद्देश्य को अपनाएँ। उसे पूरे जोश के साथ अपनाएँ।

इसे पूरी ईमानदारी से अपनाएँ। और इसे सबसे अच्छे तरीके से करें जैसा कि किसी ने पहले कभी नहीं किया है, चाहे वह उपहार कुछ भी हो। वास्तव में, यह वस्तु इतनी अलग है कि हमें पता ही नहीं है कि यह उपहार कहलाने के लिए इतनी खास कैसे थी।

सभी तरह के प्रस्ताव हैं। इससे हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि उपहार शब्द अक्सर शरीर में किसी कार्य का वर्णन मात्र होता है। हर छोटे चर्च के पादरी को पता है कि एक स्वयंसेवक चौकीदार भगवान की ओर से एक उपहार है।

यह सूची इफिसियों 4 की तरह ही प्रतिभाशाली लोगों पर ध्यान केंद्रित करके शुरू होती है। NIV व्याख्यात्मक रूप से अनुवाद करता है ताकि इस पर जोर दिया जा सके। इस पर अपने संस्करणों की तुलना करें।

दावे के आधार पर रैंकिंग आमतौर पर एक असामान्य सूची होती है। क्या रैंकिंग का तात्पर्य महत्व के क्रम से है? या अधिकार के क्रम से? या चर्च की स्थापना और निर्माण में नए नियम की ऐतिहासिक मिसाल के क्रम से? इसे देखने के अलग-अलग तरीके हैं और फिर भी प्रेरितों,

भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों को सूची में अद्वितीय लोगों के रूप में रखा जा सकता है। लेकिन इसके बारे में सोचने के एक से अधिक तरीके हैं।

और प्रेरितों के बारे में सोचने के एक से ज़्यादा तरीके हैं। क्या यह बारह के स्तर का प्रेरित है? पॉल बारह में से एक नहीं था, लेकिन वह बारह के स्तर का था। लेकिन अन्य संभावित लोग भी थे, शायद एन्ड्रोनिकस और जूनियस, जो पॉल या बारह के स्तर के नहीं थे, लेकिन फिर भी उन्हें प्रेरित कहा जाता था।

खैर, यह एक बड़ी चर्चा है। और यहाँ इसका एक हिस्सा है। फी को आश्चर्य है कि क्या यह प्रेरित समूह के प्रति अधीनता नहीं दिखा रहा है, जो प्रेरित, भविष्यवक्ता और शिक्षक होंगे।

सच कहूँ तो, यह वास्तविकता है। मेरे विचार से, वे नेता हैं। समस्या यह है कि पहली सदी में वे कौन थे, यह पहचानना एक बात है, लेकिन हमारे वर्तमान संदर्भ में वे कौन हैं, यह पहचानना कठिन और विवादास्पद है।

निश्चित रूप से, कोई भी उन्हें पसंद नहीं करता, लेकिन फिर भी, किसी भी व्यक्ति के ठीक से काम करने के लिए कुछ क्रम तो होता ही है। किसी भी समूह में नेतृत्व होना चाहिए। कुछ लोग ऐसे होने चाहिए जो फैसले लें और कुछ ऐसे जो उनका अनुसरण करें।

और यह उन लोगों पर निर्भर करता है जो अनुयायियों को समझाना चाहते हैं, उन्हें यह समझने में मदद करना चाहते हैं कि वे इसलिए अनुसरण नहीं कर रहे हैं क्योंकि उन्हें करना है, बल्कि इसलिए क्योंकि वे करना चाहते हैं। प्रभावी नेतृत्व और कॉर्पोरेट नेतृत्व के बीच यही अंतर है। निश्चित रूप से, कोई भी उन्हें पसंद नहीं करता है, लेकिन फिर भी, किसी के भी ठीक से काम करने के लिए कुछ क्रम होता है।

इस सूची में पहले तीन लोग पदधारी प्रतीत होते हैं, जबकि शेष मंत्रालय के कार्य हैं। तो, आप देखिए, यह सूची बहुत सारे सवाल उठाती है। आप उन सवालों का पता लगा सकते हैं, लेकिन सूची की सामान्य रूपरेखा अपेक्षाकृत स्पष्ट है।

तो, हमारे पास एक प्रेरित है। और इसका अध्ययन किया जा सकता है और अध्ययन किया जा सकता है और अध्ययन किया जा सकता है। इंग्लैंड में लाइटफुट की बात करें, जिन्होंने प्रेरितों पर एक बड़ा निबंध लिखा था।

थिसलटन ने अपने काम में कई खंडों में इसे शामिल किया है। सभी प्रमुख टिप्पणियों में प्रेरितों की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की गई है। बारह और पॉल की तरह विशेष रूप से, या किसी पद के बजाय किसी उपहार के रूप में, अन्य तरीकों से।

प्रेरित एक ऐसा शब्द था जो बारह प्रेरितों, मत्ती और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, बारह पत्थरों की कल्पना, बारह द्वार, इत्यादि को शामिल करता है। रोमियों 16:7 में पॉल, एन्ड्रोनिकस और जूनियस को प्रेरित कहा गया है। सवाल यह है कि क्या इस शब्द को हमेशा बारह और पॉल के रूप में विशेष रूप से देखा जाना चाहिए, या फिर, उपहार सूची में, इसे एक मंत्रालय शब्द के

रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे दूसरों पर लागू होने वाले शब्द के व्यापक उपयोग की अनुमति मिलती है।

फिट्ज़मेयर टिप्पणी करते हैं कि इस पाठ में, प्रेरितिक भूमिका को डायकोनिया के एक रूप के रूप में समझा जाना चाहिए, अर्थात्, मंत्रालय या सेवा। वह रोमन कैथोलिक है, इसलिए वहाँ जाँ। अधिकांश लोग प्रेरितिक उत्तराधिकार प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते हैं, जैसे कि रोमन कैथोलिक या यहाँ तक कि कुछ करिश्माई लोग भी।

देखिए, आज भी प्रेरित पौलुस के स्तर के ही हैं। पुनर्जीवित प्रभु को देखना पौलुस के स्तर का प्रेरित होने की एक शर्त है। उन ग्रंथों को देखें।

1 कुरिन्थियों 9:1 और जोन्स नामक एक व्यक्ति की ग्रंथ सूची। आपको यह आखिरी हैंडआउट में मिलेगा। उन मानते हैं कि प्रेरित पॉल में बारह की तुलना में एक व्यापक सर्कल का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन उनका मानना है कि वे अभी भी संस्थापक सदस्यों के एक विशेष समूह का गठन करते हैं जिन्हें रोमियों, 1 कुरिन्थियों, गलातियों और इसी तरह के अन्य अंशों के आधार पर व्यक्तिगत रूप से नियुक्त किया जाता है।

थिसलटन ने उन को उद्धृत किया। मेरे पास उन का खंड उपलब्ध नहीं है। एन्ड्रोनिकस और जूनियस की वास्तविक स्थिति पर बहस चल रही है।

अधिकांश प्रमुख टिप्पणियाँ 1 कुरिन्थियों 12:28 को बारह और पौलुस तक सीमित रखती हैं और कहती हैं कि उनके समय के बाद कोई उत्तराधिकारी नहीं हैं। इसलिए, बारह और पौलुस से अधिक व्यापक रूप से प्रेरितों के मुद्दे का अध्ययन किया जाना चाहिए, लेकिन इसे इस पाठ के बाहर अध्ययन करने और अन्य ग्रंथों में देखने की आवश्यकता हो सकती है। बारह और पौलुस के अलावा किसी और चीज़ के बारे में बहुत अधिक कथन नहीं हैं, लेकिन कुछ हैं, और उन पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि क्या हम किसी पद के बारे में बात कर रहे हैं या हम केवल एक दूत के रूप में उपहार के बारे में बात कर रहे हैं।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तरह ही नए नियम के भविष्यवक्ताओं को भी सीधे परमेश्वर से सटीक जानकारी प्राप्त हुई। संभवतः उन्होंने सत्य की सटीक घोषणा करने और प्रेरितों की अनुपस्थिति में कलीसिया का मार्गदर्शन करने का उद्देश्य भी पूरा किया। मार्टिन ने उन्हें मण्डली के लिए ईश्वरीय इच्छा का रहस्योद्घाटन प्रदान करने के रूप में वर्णित किया है।

और मैं सोचता हूँ कि नए नियम के भविष्यवक्ता एक विशेष पद हैं, जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तरह ही हैं, जो प्रेरितों के साथ संगत हैं, लेकिन किसी भी दिशा में एक के स्थान पर दूसरे की जगह नहीं लेते। शिक्षकों को यहाँ पादरी शब्द के बिना सूचीबद्ध किया गया है। शिक्षक संभवतः गैर-प्रकटीकरण करने वाले व्यक्ति थे जो ईसाई धर्म के अर्थ और नैतिक निहितार्थों को संप्रेषित करने और समझाने में प्रतिभाशाली थे।

मैं इसे समाप्त करने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे यहाँ समाप्त करने की आवश्यकता है क्योंकि हमारा समय हमसे दूर जा रहा है। शिक्षकों को यहाँ पादरी शब्द के बिना सूचीबद्ध किया गया है।

लेकिन संज्ञा सहायक अगले बिंदु में आती है। तो, आपको प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक मिले, और फिर आप दूसरों में चले गए। और मैं इस सूची में शामिल सभी लोगों का इलाज नहीं कर रहा हूँ, लेकिन इसे सहायक कहा जाता है।

एनआरएसवी कहता है कि सहायता के रूप, जो कुछ भी हो सकते हैं, केवल नए नियम में ही पाए जाते हैं। यह क्रियाकलाप का शब्द है जिसका अर्थ है मददगार कार्य करना। यह परिभाषित नहीं करता कि वे क्या हो सकते हैं, कुछ भी।

थायर इसे डीकन के संदर्भ के रूप में व्याख्या करते हैं। इस शब्द का सेप्टुआजेंट में भी मामूली उपयोग है। अंग्रेजी में रोमियों 12:8 समान लगता है लेकिन ग्रीक में समान नहीं है।

लेकिन यह संभवतः समानांतर नहीं है क्योंकि उस विशेष संदर्भ में पैसा नज़र आता है। इसलिए आप अंग्रेजी भाषा में संबंध बना सकते हैं, लेकिन सावधान रहें क्योंकि वैध संबंध बनाने के लिए आपको अंतर्निहित ग्रीक शब्द तक पहुँचना होगा - प्रशासन के लिए स्त्रीलिंग संज्ञा और नेतृत्व के NRSV रूप और मार्गदर्शन के NIV रूप।

थिसलटन की रणनीति बनाने की क्षमता। तो, आप देखिए, हर कोई इनसे अर्थ निकालने की कोशिश कर रहा है क्योंकि हमारे पास कोई संदर्भ नहीं है, न ही हमारे पास कोई अन्य घटनाएँ हैं जो हमारी मदद कर सकती हैं। इसका उपयोग केवल यहाँ नए नियम में किया गया है।

इसका बाइबिल से इतर उपयोग शासन करने के संदर्भ में है। समकक्ष पुल्लिंग संज्ञा का उपयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जो जहाज चलाता है। यह उनके लिए काफी हद तक स्पष्ट था, और यह शायद केवल एक चीज़ के अर्थ में एकरूप नहीं था, लेकिन यह एक ऐसी श्रेणी थी जो सहायता और प्रशासन के तहत कई तरह की चीज़ों को कवर कर सकती थी।

ये दोनों ही बातें एकता और समूह के अच्छे संचालन के लिए बहुत ज़रूरी हैं। खैर, आखिरी आयतें, 29 और 31, जो मैं कहने जा रहा हूँ, उससे कहीं ज़्यादा हैं, यहाँ शामिल हैं। वे हमारे समय में जितना मैं बता सकता हूँ, उससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं।

लेकिन 29 और 30 में प्रश्नों की भाषा संरचना कहती है, क्या सभी प्रेरित हैं, क्या सभी भविष्यद्वक्ता हैं, क्या सभी शिक्षक हैं? उन सभी प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित है कि नहीं वे नहीं हैं, नहीं वे नहीं हैं, नहीं वे नहीं हैं। ग्रीक नकारात्मक और नकारात्मक तरीके से प्रश्नों को उत्तर देने के लिए तैयार कर सकता है कि नहीं, वे नहीं हैं।

तो, यह अनुमान नहीं है। यह वास्तव में व्याकरण है। इसमें एक अलंकारिक प्रश्न का उपयोग किया गया है, लेकिन लेखक इस प्रक्रिया में उत्तर को स्पष्ट करता है।

यह स्पष्ट करना भी महत्वपूर्ण है कि महान उपहारों को धारण करना जरूरी नहीं है जो किसी को महान बनाता है। पॉल एक दिलचस्प संक्रमण कथन का उपयोग करता है लेकिन अधिक महान

उपहारों की तलाश करता है, जो वह अंततः दिखाता है कि शिक्षा के उपहार हैं। और अब मैं आपको और भी बेहतरीन तरीका दिखाऊंगा।

सबसे बढ़िया तरीका। यह कथन 1 कुरिन्थियों 12 के विषय को 1 कुरिन्थियों 13 में बदल देता है। प्रेम के बारे में जो कुछ उसने कहा वह श्रेष्ठ है, यह 13 में बताया गया है।

और अब, ये तीन बचे हैं, लेकिन इनमें से सबसे बड़ा है प्रेम। अध्याय 13, अध्याय 12 से 14 तक की गतिविधि का एक अभिन्न अंग है। यह सिर्फ पॉल के दिमाग में आया कोई विचार या कोई भावनात्मक भक्ति या प्रेम पर कोई महान अध्याय नहीं है।

यह 12 और 14 को जोड़ता है। यह विभाजन की समस्या और एक ऐसे समुदाय में विविधता की आवश्यकता को जोड़ता है जो एकीकृत से कम था क्योंकि हम 14 में उपहारों के कार्य में आगे बढ़ते हैं। 12.31 अध्याय 13 में संक्रमण प्रदान करता है।

कुछ अनुवाद 12 से बंद होते हैं, अन्य 31a से शुरू होते हैं, और 31b से शुरू होते हैं। तथ्य यह है कि, कक्षा में, मूल पांडुलिपियों या हमारे पास मौजूद किसी भी पांडुलिपि में कोई अध्याय या पद विभाजन नहीं था, जो कि बड़े पैमाने पर प्रारंभिक हैं। हम इसे बाद में बनाएंगे।

चूंकि यह एक बहुत ही करीबी स्थिति है, इसलिए संक्रमणकालीन कथन हमेशा दोनों दिशाओं में जाते हैं। नतीजतन, यह आपके पैसे का भुगतान कर रहा है, इसलिए अपनी पसंद चुनें, लेकिन इस तथ्य से अवगत रहें कि यह एक संक्रमणकालीन छंद है, और हमारे पास अध्याय 12 और अध्याय 13 के बीच एक करीबी संबंध है। खैर, जब हम वापस आएं, तो हम अध्याय 13 और 14 के बारे में बात करने जा रहे हैं, और हमें एक व्याख्यान में ऐसा करना होगा।

यह आसान नहीं होगा लेकिन हम इसे हासिल करने जा रहे हैं। उसके बाद, मैं उपहारों के बारे में विवाद के दृष्टिकोण से उपहारों पर एक व्याख्यान दूंगा, न कि केवल यहाँ के पाठ पर। हमने पाठ को देखा है, और हम धर्मशास्त्रीय क्षेत्र को देखेंगे और देखेंगे कि लोग इस बारे में कैसे बहस कर रहे हैं। मैं आपको कुछ मार्गदर्शन देने की कोशिश करूँगा कि आप इस पर कैसे शोध कर सकते हैं और अपने निष्कर्ष पर कैसे पहुँच सकते हैं।

अध्याय 12 से 14 के बाद, हम 15 और 16 में हैं, बहुत बढ़िया सामग्री है लेकिन जिस तरह से मैं इसे पेश करने जा रहा हूँ, उस लिहाज से यह उतनी लंबी नहीं है। और इसलिए, परिणामस्वरूप, हम अंत के बहुत करीब पहुँच रहे हैं। यदि आप सभी व्याख्यानों के लिए यहाँ आए हैं, तो मेरी सहानुभूति आपके साथ है, वहाँ बने रहने के लिए मेरी बधाई, और मुझे पूरी उम्मीद है कि यह उपयोगी होगा।

मुझे लगता है कि व्याख्यान के नोट्स आपके लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं, और मैं इस बात के लिए आभारी हूँ और धन्य हूँ कि आपने सुनने की परवाह की। तो, आपका दिन शुभ हो और हम वापस आएँगे और अगले व्याख्यान में अध्याय 12 से 14 को समाप्त करेंगे। आप पर आशीर्वाद।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह व्याख्यान संख्या 29, 1 कुरिन्थियों 12-14, आध्यात्मिक उपहारों से संबंधित प्रश्नों पर पॉल का उत्तर है। 1 कुरिन्थियों 12.